ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 40, अंक 10, अप्रैल 2005, मूल्य 5.00

37

आबू रोड (शान्तिवन)- त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में डायमण्ड सभागार के सामने शिव ध्वजारोहण करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य भाई-बहनें ।

सारनाथ (वाराणसी)- महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित शोभायात्रा का हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ करने के पश्चात् काशी सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज, प्रख्यात तबला वादक, पद्मविभूषण भ्राता पं. किशन महाराज, ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन, ब्र.कु. दीपेन्द्र भाई, ब्र.कु. दीपा बहन तथा ब्र.कु. रवि भाई समूह चित्र में ।
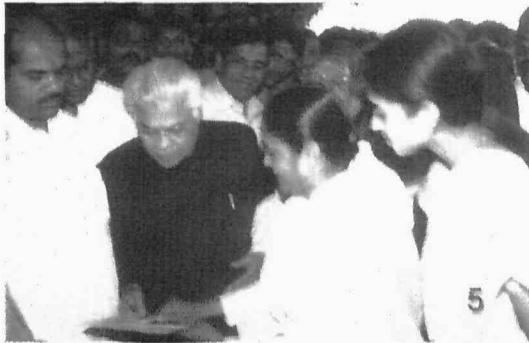
1. इंदौर (ओमशान्ति भवन)- अंधकार से प्रकाश की ओर अभियान का उद्घाटन करते हुए (मध्य में) म.प्र. के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री भ्राता कैलाश चावला (दांये) म.प्र. के पुलिस महानिदेशक भ्राता एस.के. दास, पुलिस महानिरीक्षक भ्राता पी.एल. पाण्डेय, ब्र.कु. हेमा बहन तथा (बांये) ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई तथा भ्राता एम.के. मतलानी । **2. रायगंज (प.बं.)**- केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री भ्राता प्रियरंजनदास मुंशी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वप्न भाई । **3. सेलू**- महाराष्ट्र की सार्वजनिक आरोग्य व कुटुंब कल्याण मंत्री डॉ. विमल ताई मुंदड़ा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अर्चना बहन । साथ में खड़े हैं विधायक भ्राता बाबाजानी जी दुर्राणी। **4. बलांगिर (उड़ीसा)**- केन्द्रीय मंत्री भ्राता नारायण जे. राठौर का गुलदस्ते से स्वागत करती हुई ब्र.कु. जयश्री बहन । **5. विदर (पावनधाम)**- कर्नाटक के वन मंत्री भ्राता गुरुपादप्पा नागमारपल्ली को व्यसन मुक्ति आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाती हुईं ब्र.कु. वीनू बहन । साथ में हैं विधायक भ्राता बंडप्पा खाशमपुर । **6. सोलापुर**- महाराष्ट्र के गृहराज्य मंत्री भ्राता सिद्धाराम म्हेले को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सोमप्रभा बहन । साथ में हैं पूर्व मंत्री भ्राता आनंदराव देवव्रते । **7. आगरा (सेक्टर-7)**- शिव जयंती के उपलक्ष्य में सद्भावना यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए उत्तरप्रदेश के स्वतंत्र प्रभाग मंत्री चौ. बाबूलाल जी । साथ में हैं ब्र.कु. सरिता बहन, जेलर भ्राता एस.एस. चौहान तथा अन्य भाई-बहनें । **8. गुमला**- झारखण्ड के शिक्षा राज्य मंत्री भ्राता सुदर्शन भगत को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शान्ति बहन ।

– संजय की कलम से

सहज राजयोग द्वारा प्राप्ति

हरेक मनुष्य चाहता है कि जीवन में स्थायी सुख और शान्ति की प्राप्ति हो और कभी भी कोई रोग, दुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप या अशान्ति न हो। परन्तु सुख और शान्ति का आधार तो मनुष्य का निर्विकार मन है क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य आदि विकार ही वास्तव में दु:ख तथा अशान्ति के जनक हैं।

सहज राजयोग का उद्देश्य मनुष्य के जीवन में पवित्रता स्थापन करके उसे शाश्वत एवं निरन्तर शान्ति एवं सुख प्राप्त कराना है। आज हम देखते हैं कि संसार में अनेक प्रकार के दु:ख हैं। कोई भी व्यक्ति दु:ख एवं अशान्ति से पूर्णत: मुक्त नहीं है। किसी को शरीर का कष्ट है तो किसी को चिन्ता ने घेर रखा है। कोई मुकद्दमेबाज़ी के कारण अशान्त है तो कोई व्यापार में हानि हो जाने के कारण दु:खी है। इन सबका कारण मनुष्य की कोई-न-कोई भूल अथवा कोई-न-कोई व्यवहारिक या आचरणात्मक त्रुटि है अथवा पूर्वजन्म में उस द्वारा किया हुआ कोई विकर्म है। इन सभी से मुक्त होने के लिए अपने वर्तमान व्यवहार, आचार एवं स्वभाव को पवित्र बनाना तथा पूर्वजन्मों में किए हुए विकर्मों को दग्ध करना ज़रूरी है। सहज ईश्वरीय राजयोग मनुष्य के इसी लक्ष्य की पूर्ति करता है।

सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा मनुष्यात्मा पूर्णत: पवित्र एवं कर्मातीत होकर इस देह-बन्धन, भव-बन्धन और कर्म-बन्धन से मुक्त हो जाती है। इस संसार के दु:ख रूप काँटेदार वृक्ष से उसका पल्ला छूट जाता है और हिंसा तथा तमोगुण रूप गिद्ध उसका पीछा छोड़ जाता है। मनुष्यात्मा अपने स्वरूप में पूर्णत: स्थित होकर सूर्य, चाँद, तारागण के पार के लोक – ब्रह्मलोक अथवा परलोक – में जाकर वास करती है, जहाँ सदा शान्ति है। वहाँ न कर्मेन्द्रियाँ हैं, न कर्म, न कर्म-फल। उसे ही 'ब्रह्म-निर्वाण' अथवा 'मुक्तिधाम' भी कहा गया है। वहाँ कुछ काल वास के बाद मनुष्यात्मा अपनी पवित्रता एवं दिव्यता की पराकाष्ठा अनुसार सतयुगी या त्रेतायुगी सृष्टि में साकार होती है। सतयुग और त्रेतायुग में उसकी अवस्था 'जीवनमुक्त' कहलाती है। तब उसके जीवन में दु:ख एवं अशान्ति का नाम-निशान भी नहीं होता।

शेष पृष्ठ ......07 पर

अमृत-सूची

★

मनुष्य का मन एक ऐसी पुदकने वाली सत्ता है जिसके लिए वर्तमान शोधकर्त्ताओं का कहना है कि यह किसी भी विचार पर मुश्किल से दो सेकण्ड ही ठहर पाता है। दो सेकण्ड बाद फुदक कर दूसरे, तीसरे विचार तक पहुँच जाता है। मन की इस स्थिति के कारण कई दृश्यों की कोंध मानस-पटल पर तो होती रहती है परन्तु उनमें से टिकता एक भी नहीं है। इसका परिणाम यह निकलता है कि मानव किसी भी विषय या क्षेत्र के प्रति पूर्णनिष्ठा से चिन्तन-मनन नहीं कर पाता। जैसे मान लें दूरदर्शन पर एक दृश्य दो ही सेकण्ड ठहरे और बेतरतीब ढंग से नए-नए दृश्य हर दो सेकण्ड बाद आएँ और उनमें भी कम्पन बना रहे तो देखने वाला आदमी खीज जाता है। मन-पटल भी एक भीतरी दूरदर्शन है, जिस पर मानव के विभिन्न विचारों से बने दृश्य निरन्तर प्रकट होते रहते हैं और बदलते रहते हैं। उदाहरण के लिए एक कार्यालय का अधिकारी अपने सामने एक फाइल खोलता है और उसमें किसी रामचन्द्र नाम के व्यक्ति का उल्लेख देखता है। यह नाम पढ़ते ही उसे ध्यान आता है कि कल उसके घर जो रिश्तेदार आए थे उनमें भी एक रामचन्द्र नाम का व्यक्ति था। फिर उसे उस रिश्तेदार द्वारा बताई घरेलू बात याद आती है कि उसका एक बच्चा पिछले दिनों खेलते समय चोट खा गया और पाँव की हड्डी टूट गई। फिर वह कल्पना में ही डॉक्टर, अस्पताल और डॉक्टरों की महँगी फीस तथा लाइलाज बीमारियों के बढ़ते दौर के बारे में सोच कर परेशान होने लगता है। चपरासी की आहट सुन कर उसे अपने खोए हुए होने का अहसास होता है और पुन: अपना ध्यान फाइल में लगाने की कोशिश करता है परन्तु ध्यान को चूँकि भागने का संस्कार ही पड़ गया है इसलिए कुछ घड़ियों के लिए फाइल में लग कर वह पुन: भाग जाता है। और इस प्रकार थोड़े समय में सम्पन्न हो जाने वाला कार्य कई घण्टों की खपत करा लेता है। ऐसा ही गृहिणी, विद्यार्थी, व्यापारी, खिलाड़ी, शिक्षक आदि किसी भी व्यक्ति के साथ होता है। यह एक ऐसी अवस्था है जो परेशानी पैदा करती है परन्तु समाधान रहित हो गई है।

यह तो स्पष्ट है कि मन एक आध्यात्मिक ऊर्जा है, एक सेकण्ड में इसकी जो गति है वह संसार के किसी भी अन्य वस्तु, पदार्थ की गति से कई गुणा अधिक है। इस ऊर्जा के अनियन्त्रित हो जाने की हद तक इसे खुला छोड़ देने का ही यह परिणाम है कि यह जिन्न की तरह मनुष्य की ही शान्ति, स्थिरता को चट करने के लिए तुल गया है। चूँकि यह अभौतिक सत्ता है, अदृश्य सत्ता है तथा आध्यात्मिक सत्ता है इसलिए कोई भी सांसारिक पदार्थ इसके सुख का और इसे एकाग्र करने का आधार नहीं हो सकता।

सुख, शान्ति, आकर्षण – पदार्थों में न होकर मन के भाव हैं

मन को राजी रखने के योग रूपी उपाय का ज्ञान न होने के कारण आज मानव पदार्थों में सुख-शान्ति खोजता है परन्तु सुख तो चेतन सत्ता मन का विषय है। पदार्थ जड़ होते हैं, उनमें निज़ी सुख या दु:ख जैसी भावनाएँ नहीं होती। यही कारण है कि मन के किसी बात से दु:खी हो जाने पर व्यक्ति को अनेक प्रकार के व्यंजन भी फीके और बेस्वाद जान पड़ते हैं। दूसरी बात, एक वस्तु किसी के मन को इतनी भा जाती है कि वह उसके बिना रह नहीं सकता और किसी को उससे इतनी वितृष्णा हो जाती है कि वह देखना भी नहीं चाहता। अत: आकर्षण भी वस्तुओं में न होकर मन का ही एक भाव है। तीसरी बात, पदार्थों का उपभोग करते-करते मानव की भोगने की इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं। शरीर जर्जर हो जाता है और मानव काल के गाल में पहुँच जाता है। इससे भी स्पष्ट है कि पदार्थ मानव की स्वस्थ काया, लम्बी आयु और मानसिक शान्ति के आधार नहीं हैं।

चौथी बात, पदार्थ स्वयं परिवर्तनशील हैं इसलिए किसी को स्थाई शान्ति दे ही कैसे सकते हैं। मनुष्य द्वारा मुश्किल से एकत्रित किए गए पदार्थ किसी कारण से उससे छिन जाएँ तो ये भी एक असहनीय पीड़ा का कारण बन जाते हैं। अत: सुख-शान्ति की प्राप्ति का ध्येय साधनों के संग्रह से पूरा नहीं हो सकता।

मन का निर्मल होना ज़रूरी

परन्तु इसका अभिप्राय यह भी नहीं है कि व्यक्ति पदार्थों का उपभोग या संग्रह छोड़ दे। यदि रोटी, कपड़ा, मकान का समुचित प्रबन्ध न हो तो जीवात्मा के मन को हिलाने वाली बड़ी समस्या उपस्थित हो जाती है। अकर्मण्यता और आलस्य भी बड़े विकार हैं, जो खाली मन में शैतान की तरह घुस जाते हैं। हमारा अभिप्राय तो यह है कि मन की शान्ति के लिए धन-पदार्थों के अलावा पवित्रता, एकाग्रता, शान्ति, सभी से प्रेम भरे सम्बन्ध तथा सकारात्मक गुण भी जरूरी हैं। इन प्राप्तियों के लिए मन का निर्मल होना ज़रूरी है। मन निर्मल तथा कुसंस्कारों से अप्रभावित रहे इसका उपाय राजयोग है। योगाग्नि से ही मन में मौजूद विकारों के बीज दग्ध हो जाते हैं और पुन: उत्पत्ति को प्राप्त नहीं करते। राजयोग से ही पूर्व के पापकर्म भी मिट जाते हैं और आगे के लिए पाप न करने का मनोबल भी आ जाता है। योग से मानव का सम्बन्ध परमात्मा से जुट जाता है और उसकी दिव्य शक्तियाँ फव्वारे की तरह आत्मन् को सींचने लगती हैं।

व्यस्तता के साथ सन्तुष्टता और सरलता

राजयोग के अभ्यास द्वारा व्यस्तता से थके मन और कर्मेन्द्रियाँ हल्के, चुस्त, दुरुस्त तथा कार्य सक्षम हो जाते हैं। जैसे लगातार कार्य करने से मशीन के पुर्जे गर्म हो जाते हैं या चर्र-चर्र की ध्वनि करने लगते हैं। ऐसा होने पर हम मशीन को रोक कर उसमें ग्रीस या अन्य कोई तेल आदि डालते हैं जिससे वह तरोताजा हो जाती है। यदि हम कहें कि हमारे पास मशीन में तेल डालने का समय नहीं है तो यह लापरवाही मशीन को बिगाड़ देगी। यही बात मन पर लागू होती है। यदि हम कहें कि हमारे पास रिलेक्स होने के लिए, देह से न्यारा होने के लिए, शान्त होने के लिए समय नहीं है तो यह लापरवाही नुकसान पहुँचाएगी बजाए लाभ के। ऐसी अवस्था में हम व्यस्त तो दिखेंगे परन्तु हमारी उत्पादकता घट जाएगी। व्यस्त रहना अच्छा है परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि व्यस्तता के दौरान सरल, प्रसन्न, शान्त, सन्तुष्ट और सफल कितने हैं। राजयोग के अभ्यास से व्यस्त जीवन भी सरलता और सन्तुष्टता से भर जाता है। राजयोग व्यस्त जीवन को भी प्रभावोत्पादक और परिणामोत्पादक बना देता है।

राजयोग अर्थात् आन्तरिक कानून प्रक्रिया असरदार

राजयोग के अभ्यास से व्यक्ति के भीतर भी कानून प्रक्रिया असरदार हो जाती है। जिससे वह बाहरी कानूनों का विधिवत् पालन करता है। भीतर की प्रकिया में आत्मा, राजा के रूप में विधि और आदेश जारी करती है और सूक्ष्म शक्तियाँ मन, बुद्धि और संस्कार तथा स्थूल कर्मेन्द्रियाँ आँख, कान, हाथ ..... उनका पालन करते हैं। आत्मा की आवाज जितनी अधिक सशक्त और बुलन्द होती है, सभी कर्मेन्द्रियाँ उतनी ही तत्परता से उसका पालन करती हैं। आत्मा की आवाज यदि क्षीण, हीन हो तो कर्मेन्द्रियाँ ही उस पर हावी होने लगती हैं। ऐसे में आत्मा को शक्ति चाहिए ताकि वह कर्मेन्द्रियों पर राज्य कर सके। यह शक्ति उसे सर्वशक्तियों के एकमात्र स्रोत परमात्मा पिता से सम्बन्ध जोड़ने पर ही प्राप्त हो सकती है। इसी सम्बन्ध को राजयोग कहा जाता है। राजयोग के अभ्यास से आत्म-तेज निखरता है और ईश्वरीय आनन्द मिलता है जिससे आत्मा स्थूल, सांसारिक, निकृष्ट, पतनगामी, क्षणिक सुखों से मुक्त होती जाती है। ऐसी सशक्त आत्मा ही बाहरी जगत के नियम और कानूनों का पालन करती हुई सबके यश की भागी बनने के साथ-साथ ईश्वरीय उत्तराधिकार को प्राप्त करती है।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में वैर रखना

सर्व धर्म एकता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं आई.आई.एम. अहमदाबाद के विजिटिंग प्रोफेसर भ्राता सैयद अब्दुल्ला तारिक ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अकादमी 'ज्ञान सरोवर' में आयोजित शिक्षकों के आध्यात्मिक सम्मेलन में भाग लिया। इस आयोजन में भ्राता तारिक ने सर्व वक्ताओं एवं श्रोताओं का ध्यान अपने सारगर्भित व्याख्यानों की ओर आकर्षित किया। मुस्लिम धर्मावलंबियों द्वारा प्रयुक्त 'नमाज' (नमाज = नमः + अज अर्थात् नमन करें उस अजन्मे ईश्वर को) शब्द का अर्थ बताते हुए, उसकी उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई, यह प्रमाणित किया। प्रस्तुत हैं उनके अनुभव उन्हीं के शब्दों में – सम्पादक

कुरान पाक कहता है– "भलाई का काम जहाँ पर भी हो, जिसके पास भी मिले, उसे सहयोग दो और बुरे कार्य को करने वाले चाहे तुम्हारे परिवार के सदस्य ही हों, चाहे तुम्हारे मज़हब के हों उनका साथ मत दो।" जिससे लोगों का जीवन सुधरे, लोग अच्छे इंसान बनें, ऐसे कार्य में सहयोग देने का कुरान का आदेश है, इस्लाम का आदेश है। किसी भी मज़हब का दायरा संकीर्ण नहीं होता लेकिन बदकिस्मती ही कहें कि आज के दौर में कुछ धार्मिक कट्टरपंथी ठेकेदारों के इशारे पर, धर्म के नाम पर लोग आँखें बंद कर चल रहे हैं। इस्लाम में भी ऐसा हो रहा है। हर भाषा में कुरान मौजूद है। लोगों को बतलाया जाता है कि सत्य यह है, आदेश ये हैं, तो लोग पूछते हैं कि क्या मौलवी साहब ने कुरान नहीं पढ़ा होगा। पढ़ने और समझने में भी गलती हो जाती है, इंसान ही तो है। लेकिन कुरान तो मौजूद है, इसे तो देख लो, हम दिखाना चाहते हैं लेकिन संकीर्ण विचारों के कारण इंसानों की आँखें बंद हैं। उनकी सोच में बदलाव लाने के लिए हम भी प्रयास कर रहे हैं।

भारत में जो इस्लामिक गुरुकुल अर्थात् दारुल उलूम हैं, उनमें से जो दो सबसे अच्छे हैं, वे हैं – दारुल उलूम-देवबंद (यू.पी.) और नज़वा (लखनऊ)। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड में उन्हीं के अध्यक्ष हुआ करते हैं। यहाँ से जो पास होकर नये-नये आलिम निकलते हैं, ये वे लोग हैं जिनमें से कई अगले बीस सालों में काज़ी बनेंगे, मुफ्ती सहर बनेंगे, इन्हीं में से कोई जामा मस्जिद का इमाम बनेगा। कई सालों से इन आलिमों को अपने खर्च पर मैं अपने पास बुलाता आ रहा हूँ और इनके लिए 10 दिवसीय शिविर लगाता हूँ, उसमें मैं दूसरे धर्मों की जानकारियाँ भी देता हूँ। इन आलिमों को कहता हूँ कि आपने इस्लाम के बारे में कई सालों से बहुत कुछ पढ़ा, अब कुछ दिन दूसरे धर्मों के बारे में जान लीजिए। आपको जो अच्छा न लगे उसे न मानिएगा लेकिन जानने में आपका क्या जाता है? इन आलिमों को मैं ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर लेकर जाता हूँ। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में आलिमों का पूरा एक बैच इकट्ठा होकर जाता है, इससे पहले शायद कभी ऐसा नहीं हुआ होगा। यदि मैं चाहता तो ब्रह्माकुमारी बहनों को अपने सभागार में बुलवाकर भाषण करवा लेता लेकिन नहीं। मैं सभी आलिमों को इसलिए सेवाकेन्द्र ले जाता हूँ कि वहाँ के शान्त और पवित्र वातावरण को ये लोग देखें। वहाँ पर तमाम आलिमों को मैं ये कहता हूँ कि मैं आपको कुछ मानने के लिए नहीं कह रहा हूँ लेकिन सुनिए तो सही, जानिए तो सही। ये वहाँ ज्ञान सुनते हैं और कोर्स

भी करते हैं। सेवाकेन्द्र में जब शिव बाबा का प्रसाद दिया जाता है तो ये आलिम मेरी तरफ देखते हैं। मैं कहता हूँ कि आपको नामों में भेद हो रहा है। आप अल्लाह का नाम लेकर खाइए। तब एक भी बिना खाए नहीं रहता। धीरे-धीरे उन आलिमों का भी जेहन इतना खुल जाता है कि कुछ ही दिनों के बाद जब वे जाते हैं तो बिल्कुल अलग व्यक्तित्व के होते हैं। वे बाद में भी मेरे सम्पर्क में रहते हैं क्योंकि उनका जेहन पूरा खुल जाता है। अब वे किसी से सम्पर्क करने में, कहीं जाने में बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाते। जब वे कहीं काज़ी होंगे, मुफ्ती होंगे या इमाम बनेंगे तो उनकी सोच बिल्कुल ही अलग होगी, वे संकीर्ण विचारों के नहीं होंगे। मैं कई सालों से इन आलिमों के लिए रामपुर (यू.पी.) में ही शिविर का आयोजन कर रहा हूँ।

सतयुग का आगमन निश्चित है

अधिकतर धर्म तथा सम्प्रदाय युगों की बात करते हैं और यह भी कहते हैं कि अभी कलियुग चल रहा है और कलियुग के बाद सतयुग आएगा। कुरान शरीफ़ में भी और हदीस में भी, एक-दो जगह नहीं बल्कि जगह-जगह ये बातें भरी पड़ी हैं, भले ही भाषा और शैली की भिन्नता है। कहा गया है कि दौर-ए-हक आएगा। कुरान की आयत में लिखा गया है कि खुदा तआला ने पैगम्बर को भेजा सच्चाई को बतलाने के लिए कि सच्चाई का युग आएगा और बुराई चली जाएगी। **कुरान पाक कहता है कि झूठ को एक दिन जाना ही है और सच को आना ही है। तो ये कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है, इसमें जरा भी शक की गुंजाइश नहीं है। कुरान और हदीस के ऊपर मेरा जो अध्ययन है, उसके अनुसार– इस्लाम इस बात से पूरी तरह सहमत है कि सतयुग का आगमन बहुत ही करीब है।** हदीस और कुरान में फर्क सिर्फ इतना ही है कि कुरान, मोहम्मद साहब के ऊपर उतारी गई ईश्वरीय वाणी है और बहुत-सी बातें जो खुद मोहम्मद साहब ने अपने शब्दों में कही, उसको हदीस कहते हैं। उसमें है कि सारी मखलूक (सृष्टि) अल्लाह का परिवार है और अल्लाह को सबसे ज्यादा वे लोग प्रिय हैं जो इस सृष्टि को पसंद करते हैं।

सात्विक भोजन और ब्रह्मचर्य का महत्त्व

इस्लाम में भी बहुत सारी सूफी परम्पराएं हैं, जहाँ साधनाएं होती हैं। उन साधनाओं के अन्दर ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है। खान-पान में यहाँ तक होता है कि प्याज और लहसुन भी बिल्कुल ही छोड़ देते हैं। साधना में ये सारी बातें जरूरी होती हैं। कुरान में कहा गया है कि गृहस्थ जीवन में जो जिम्मेदारियाँ हैं और उसकी जो परीक्षाएं हैं, उनसे जूझते हुए जो तपस्या है वो बहुत ऊँची तपस्या है। परिवार के सभी लोगों को हम श्रेष्ठ संस्कार दे सकें, हरेक को उनका अधिकार दे सकें। हमारा विकास और उत्थान उसी शक्ल में हो। रूहानी माता-पिता के अलावा शारीरिक माता-पिता, भाई-बहनें भी हैं। उनके त्याग हैं मेरे प्रति, कितने दिनों तक क्या-क्या बर्दाश्त किया उन लोगों ने मेरे लिए, उनका कर्ज है मेरे ऊपर, उसे भी तो अदा करना है। मानव समाज के कितने लोगों का मुझ पर एहसान है, जो मुझे याद भी नहीं है। यदि इस कर्ज को नहीं चुकाऊं तो उसे एहसान फरामोशी कहेंगे। मैं खुद पर इतना ध्यान रखता हूँ कि मैं आधुनिकता और भौतिकता में खोकर समाज के एहसान को न भूल जाऊं। मेरा विश्वास है कि खुदा तक पहुँचने का रास्ता इंसानों के डेरों से हो के गुजरता है। आप भी तो यही कार्य कर रहे हैं।

एक बार मोहम्मद साहब के पास एक इंसान आया और पूछा – "हे ईश्वर के दूत! मैंने अपने बूढ़े माँ-बाप को अपने कंधों पर सवार करके मक्का, मीना और मदीना का हज कराया तो क्या मैंने उनका हक अदा

शेष पृष्ठ ......24 पर

धन तो है पर ईमान कितना है?

– ब्रह्माकुमार सुधीर, भवानीपाटना (उड़ीसा)

जब काई भी व्यक्ति किसी भी नशे से ग्रसित होता है तो अपने को बहुत ऊँचा आँकने लगता है। यह नशा भांग, शराब आदि पदार्थों के पीने से भी हो सकता है अथवा शरीर, पद, वैभव और सम्बन्धों का भी हो सकता है। इसलिए रहीम जी ने कहा है –

कनक, कनक ते सौ गुना
मादकता छलकाए,
एक खाए बोराए, एक देखे
बोराए।

इस दोहे में कनक शब्द के दो अर्थ हैं। एक अर्थ है धतूरा और दूसरा अर्थ है सोना (धन-दौलत, हीरे-मोती)। रहीम जी कहते हैं कि धतूरे से ज्यादा नशा तो सोने में होता है क्योंकि धतूरे को तो खाने से नशा चढ़ता है परन्तु सोने को तो देखने मात्र से ही आदमी अभिमानी बन जाता है। सोने की चमक से भ्रमित आत्मा के स्वधर्म और स्वमान का प्रकाश मन्द पड़ जाता है और अभिमान का नशा आसमान छूने लगता है। उसकी आँखों पर अज्ञान का पर्दा पड़ जाता है। क्या शाश्वत है और क्या नश्वर है, वह इस भेद को भुला देती है। कहा जाता है 'सबै भूमि गोपाल की' अर्थात् इस दुनिया में जो भी धन-पदार्थ हैं उसके असली मालिक तो भगवान हैं। भगवान ने, मानव को निमित्त बन कर उन सब पदार्थों का इस प्रकार उपभोग करने की छुट्टी दी है जिससे कि वे पदार्थ और साधन सर्व जन सुखाय, सर्व जन हिताय सिद्ध हों, परन्तु पदार्थों या सत्ता की अल्पकालिक मालिकी पाकर उन पर अभिमानी करने और

अभिमान के नशे में दूसरों को दु:ख देने की आज्ञा कदापि नहीं दी है। किन्हीं पूर्व के पुण्यों के फलस्वरूप यदि सांसारिक झूठा धन अर्थात् अल्पकालिक धन और सत्ता मिल भी जाए तो भी असली धन का महत्त्व भुला नहीं देना चाहिए। बार-बार जाँच करनी चाहिए कि मेरे पास दुकान, मकान, पकवान, पोशाक आलीशान आदि होने के साथ-साथ ईमान कितना है? सद्भावना, संवेदना, विवेक, करुणा, परोपकार, सत्य, सादगी, धैर्य, साहस, मधुरता, नम्रता, श्रेष्ठ कर्म और दिव्यता रूपी धन कितना है? इस गुण रूपी धन के अभाव में संसार का समस्त धन मिट्टी के ढेले से ज़्यादा कीमत नहीं रखता। गुणवान और चरित्रवान व्यक्ति ही धन का सच्चा सुख ले पाता है। इतिहास में वर्णित एक राजा की बात को ही लीजिए –
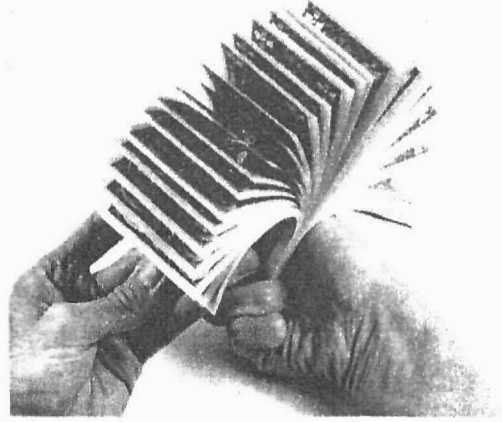
एक राजा के राज्य में एक भिक्षु आए। उनकी वाणी सुनने के लिए समस्त नगरवासी उमड़ पड़े। गली-मुहल्लों और घरों में उनके प्रवचनों की चर्चा होने लगी। राजा से भी न रहा गया। इसलिए वे भी प्रवचन सुनने के लिए चल पड़े। राजा भी बहुत प्रभावित हुए, उसे महल में ले आए, भोजन खिलाया और फिर महल दिखाते हुए हर कक्ष की एक-एक मूल्यवान वस्तु का परिचय देने लगे। ऐसा करते हुए सम्राट के चेहरे पर अभिमान का जो ज्वार आता था वह शुद्धचित्त भिक्षु से छिपा न रह सका। अंत में राजा एक विशाल आगार के समाने जाकर ठहर गए जो अमूल्य रत्नों से भरा था। राजा बोले – "भिक्षुश्रेष्ठ, ऐसे दुर्लभ रत्न भारत भर में कहीं नहीं मिलेंगे।" भिक्षु ने

आश्चर्यचकित होने का अभिनय करते हुए पूछा – "तब तो इनसे राज्य को भारी आय होती होगी?" "आय?" भिक्षु की नादानी पर मुस्कराते हुए राजा ने कहा – "इनकी सुरक्षा के लिए तो बहुत सारा धन खर्च करना पड़ता है।" भिक्षु ने समझ लिया कि यह राजा नहीं वरन् राजा का अभिमान बोल रहा है और एक निस्पृह संन्यासी के सामने भी यह अभिमान इस ऊँचाई तक पहुँचा हुआ है कि राजा को संन्यासी की बात नादानी लगती है तो फिर आम जनता के प्रति इसका कैसा व्यवहार होगा! राजा तो खजाने की सम्पत्ति को जनकल्याणार्थ सुरक्षित निधि मानता है, उसके प्रति अहंकार या मेरेपन का भाव रखने के बजाए निमित्त भाव रखता है परन्तु यह राजा अहंकार के उस ऊँचे शिखर पर चढ़ गया है जहाँ से पतन अवश्यंभावी है और पतन के बाद सर्वनाश तो स्पष्ट है ही। अत: मुझे राजा को बचाना है, उसे कल्याण और करुणा का मार्ग दिखाना है। ज्ञानी भिक्षु का रोम-रोम राजा की इस नादानी पर करुणा से भर उठा।

करुणाशील भिक्षु ने कहा – "राजन्, इन पत्थरों से अधिक कीमती पत्थर मैंने आपके राज्य में देखा है।" राजा अत्यधिक आश्चर्यचकित हो उस पत्थर को देखने के लिए उतावला हो उठा। कुछ ही क्षणों में दोनों ने एक उपेक्षित गरीब बस्ती में एक द्वार खटखटाया। एक वृद्धा बाहर आई और दोनों को घर के अन्दर ले गई। भिक्षु ने एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा – "यह है।" राजा ने क्रोध में झल्लाते हुए कहा – "यह तो चक्की है।" भिक्षु ने शान्त भाव से कहा – "ठीक कहते हो, पर तुम्हारे सभी रत्नों से श्रेष्ठ है यह। वृद्धा के श्रम की सहयोगिनी है। इस पर कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। उल्टे यह चक्की इस वृद्धा का, इसके अंधे पति का और तीन बच्चों का पोषण करती है।" करुणा की किरणें बिखेरते हुए भिक्षु ने आगे कहा – "राजन्! धन-सम्पत्ति न दिखावा करने की चीज है, न शेखी बघारने की, न गर्व करने की और न विलासिता में उड़ाने की, न पाप कर्मों में लगाने की, इसकी सुरक्षा के लिए नींद फिटाने की भी आवश्यकता नहीं है। यह तो जनकल्याण की, पुण्यकार्यों में लगा कर भाग्य बनाने की, दूसरों की ज़रूरतों को पूरा कर दुआ कमाने की चीज़ है। मिथ्या दर्प का त्याग कर दीजिए।" राजा का अभिमान टूट गया। अगले ही दिन से उसने अपनी सम्पत्ति जनहित में समर्पित कर दी।

✦✦✦

सहज राजयोग द्वारा प्राप्ति.......पृष्ठ 01 का शेष

बहुत-से लोग इस रहस्य को न जानने के कारण समझते हैं कि मुक्त होने पर आत्मा, परमात्मा में या ब्रह्म तत्त्व में लीन हो जाती है। परन्तु वास्तविकता यह है कि आत्मा तो अनादि और अविनाशी है; उसके लीन होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। फिर ब्रह्म तो है ही प्रकृति का सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्व; वह तो चेतन भी नहीं है। अत: उसमें चेतन आत्मा के लीन होने की कोई बात नहीं है। हाँ, जब आत्मा मुक्त अवस्था में ब्रह्म तत्त्व में वास करती है तब उसका मन उसमें लीन (अव्यक्त) अवस्था में होता है परन्तु आत्मा का अपना अस्तित्व तो ब्रह्म तत्त्व से अलग ही है।

मनुष्य की ज्ञान-निष्ठ अवस्था, जिसमें उसका संस्कार-परिवर्तन होता है अथवा ज्ञान द्वारा मन का शुद्धिकरण होता है, 'मरजीवा' अवस्था है। उस अवस्था में शारीरिक व्याधि या अन्य कोई कष्ट होते हुए भी मनुष्य मानसिक शान्ति बनाए रख सकता है। तथापि इस अवस्था को 'जीवनमुक्ति' की अवस्था नहीं कह सकते। जीवनमुक्त अवस्था तो मुक्तिधाम से लौटकर साकार होने की ही अवस्था है। ये दोनों अवस्थायें केवल ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा होने वाली श्रेष्ठ प्राप्तियाँ हैं। ❑❑

‘पत्र’ सम्पादक के नाम

मेरी दृष्टि इतनी कमजोर हो गई है कि मैं ज्ञानामृत पढ़ नहीं पाता हूँ किन्तु लगन तीव्र होने के कारण मैं बच्चे से ज्ञानामृत के सभी लेख, चित्रों की लिखत सहित सुनता हूँ। ज्ञानामृत में इतनी अच्छी बातें होती हैं जो व्यवहारिक जीवन में बहुत काम आती हैं। जो बातें मुझे अच्छी लगती हैं उनका संग्रह भी करता हूँ। इससे मुझे बहुत लाभ भी होता है। संजय जी के बाद आपने ज्ञानामृत को और ही रोचक बना दिया है। इसके लिए आपका धन्यवाद। मैंने ज्ञानामृत में पुनर्जन्म के सम्बन्ध में एक लेख पढ़ा तो मुझे अपने पिता के पुनर्जन्म की बात याद हो आई। उन्होंने सन् 1943 में शरीर छोड़ा और दूसरे शहर में पुन: जन्म लिया। जब वे 3 साल के हुए तो उन्होंने हमारे परिवार के सभी सदस्यों को पहचान लिया। वही आत्मा प्रमोद कुमार शर्मा के नाम से आज एडवोकेट है। इससे लेखिका की यह बात सिद्ध होती है कि मनुष्य मरने के बाद मनुष्य ही बनता है, कुत्ता, गधा, बिल्ली आदि नहीं।

– ब्रह्माकुमार प्रीतम कुमार, लखनऊ

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

ज्ञानामृत के दिसम्बर 04 के अंक में प्रकाशित लेख “माँसाहार या शवाहार” वास्तव में एक प्रशंसनीय लेख है जिसके माध्यम से लेखिका ने ऊर्जा से परिपूर्ण समझे जाने वाले इस खाद्य को एक संक्रमित, दूषित एवं अस्पृश्य बताया है। मैं तो बचपन से ही शाकाहारी रहा हूँ। आज विश्व में व्याप्त हृदय की बीमारियों में शवाहार का विशेष योगदान है। अगर माँस के प्रयोग को बन्द कर दिया जाए तो हृदयाघात से होने वाली मृत्यु को भी कम किया जा सकता है। इस लेख को पढ़ने के बाद मुझे वास्तविकता का बोध हुआ कि हम खाते क्या हैं? शव तो किसी भी प्रकार से शुद्ध एवं खाने लायक नहीं होता। इस प्रकार के लेख ही भारतीय समाज को माँसाहारी प्रवृत्ति से निकाल कर शाकाहारी प्रवृत्ति में ढालने का कार्य कर सकते हैं। ऐसे लेखों से उन लाखों-करोड़ों पशुओं एवं पक्षियों के प्राण बच सकते हैं जो क्रूर मानव की भोजन की प्लेटों में परोसे जाने की क्रूरता झेल रहे हैं। इस महान प्रेरणादायी लेख की लेखिका को, आपको तथा पतित पावन, करुणा के सागर बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद।

– कुलदीप शर्मा, मथुरा

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

मैं बाबा के अमृत रूपी वचनों के सार “ज्ञानामृत” का नियमित पाठक हूँ। मैं इसे सिर्फ एक पत्रिका नहीं बल्कि ज्ञान रूपी अमृत का सागर मानता हूँ। ज्ञानामृत के लेख, अनुभव तथा कविताओं की जितनी भी तारीफ की जाये, कम है। पूरे विश्व में शायद ही कोई ऐसी पत्रिका होगी जो इतने अल्प मूल्य में हमें ज्ञान रूपी रत्नों का इतना खजाना देती हो। ज्ञानामृत के खजाने को जितना लुटायें उतनी ही वृद्धि होती जाती है। साथ ही इसके लेख इतने सरल तथा पठनीय होते हैं कि कम पढ़े-लिखे व्यक्ति भी इसका सच्चा आनन्द उठा सकते हैं। शिव बाबा की सच्ची गीता यही है। इसे पढ़ने तथा ज्ञान का मनन करने से धारणा और संकल्प शक्ति में आश्चर्यजनक वृद्धि होती है। मैं तो ज्ञानामृत का दीवाना हूँ। सभी भाई-बहनों को नियमित रूप से इस अमृत का पान कर अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

– ब्रह्माकुमार दीपक डनसेना, सारंगढ़ (छ.ग.)

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

“ज्ञानामृत” को जितनी बधाइयाँ दूँ, कम हैं क्योंकि मेरे जीवन को हीरे तुल्य बनाने में इसका बहुत-बहुत योगदान है। यह एक अमृतधार है, बुद्धि को पवित्र बनाने वाली है। मैं ज्ञानामृत का इसलिए कृतज्ञ हूँ कि इसी ने मुझे शिव पिता से जोड़ा है। मेरे कार्यालय के सहकर्मी से मुझे पढ़ने के लिए पुरानी ज्ञानामृत मिली। उसी दिन से मैं चातक की तरह ज्ञानामृत की बूँदें पीता आ रहा हूँ। शिव पिता का भी बहुत-बहुत शुक्रिया जो मुझे चुन लिया ज्ञानामृत के माध्यम से। मैं और एक बात के लिए ज्ञानामृत का शुक्रगुजार हूँ। मेरी मातृभाषा बंगला है, फिर भी ज्ञानामृत एवं ज्ञान-मुरली नियमित रूप से सुनते-सुनते मुझे हिन्दी पढ़ना एवं लिखना आ गया है। इसमें अनुभवी भाई-बहनों के लेख आते हैं। ये लेख बहुत-सी बातें अच्छे से समझा देते हैं। मेरा सभी से विशेष अनुरोध है कि ज्ञानामृत पढ़ें और पढ़ायें। सभी कम-से-कम 10 नए पाठक बनायें। शुक्रिया बाबा, शुक्रिया ज्ञानामृत, शुक्रिया ज्ञानामृत परिवार।

ब्रह्माकुमार चन्दन, वरपेटा रोड, असम

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

हिम्मते बच्चे मददे खुदा

– ब्रह्माकुमारी कविता, खण्डवा

आज हम असुरक्षित समाज में जीवन-यापन कर रहे हैं। जीवन को भयाक्रान्त करने और नुकसान पहुँचाने वाले अनेक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारण सर्वत्र मौजूद हैं। कहीं प्राकृतिक प्रकोप, कहीं व्यक्ति की स्वभावजन्य कुवृत्तियों का वार, कहीं स्वयं की निराशा और कहीं भूख, गरीबी, अकालमृत्यु का कसता शिकंजा। भयानक होते वातावरण में सरल हृदया नारी अधिक असुरक्षित हो गई है। असामाजिक तत्व उसके अकेलेपन का, भोलेपन का और शारीरिक रूप से अपेक्षाकृत अधिक कोमल होने का नाजायज़ फायदा आए दिन उठा रहे हैं। सुरक्षा के प्रशासनिक, सामाजिक उपाय हैं परन्तु वे हर समय, हर स्थान पर उपलब्ध हो नहीं पाते हैं। प्रश्न है कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए ? शास्त्रों में आसुरी शक्तियों से घिरी देवियों को परमात्मा शिव की स्मृति और सान्निध्य से विजयी होते दिखाया गया है, अव्यभिचारी ईश्वरीय स्मृति के बल से निहत्थी सीता (आत्मा) को रावण (5 विकार) पर विजयी होते दिखाया गया है और द्रौपदी भी भगवान की मदद से पापियों की कुटिल मनसा के चंगुल से पूर्णतया सुरक्षित रहती है। आज रामायण और महाभारत काल की परिस्थितियाँ हूबहू पुनरावृत्त हो रही हैं। ऐसे में नारी की सुरक्षा का सबल उपाय है परमप्रिय परमात्मा की अव्यभिचारी याद, बुद्धि से उनकी निरन्तर स्मृति, एक बल एक भरोसे की स्थिति तथा इससे प्राप्त चारित्रिक सुदृढ़ता।

डकैतों का हमला

उपरोक्त सत्य कथन का प्रत्यक्ष प्रमाण मैंने स्वयं देखा जब मेरे घर में तीन डकैतों ने घुसकर मुझ पर हमला किया। हुआ यूँ कि प्रतिदिन की भाँति सुबह अमृतवेले ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास कर, प्रात: के आवश्यक कार्य निपटा कर, सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय महावाक्य सुनने गई। वहाँ से लौट कर जब घर आई तब पति को भोजन कराया, वे दुकान पर चले गए। बच्चे पहले ही स्कूल जा चुके थे। अब घर में मैं एकदम अकेली रह गई थी। नित्य की आदत के अनुसार मैं बाबा के संग बातें करते हुए गृहकार्य सम्पन्न करने लगी। तभी मुझे आभास हुआ कि कोई व्यक्ति लगातार हमारे घर की ओर झांक रहा है। घर से कुछ दूरी पर उसके दो और साथी भी खड़े थे। मैंने मन ही मन बाबा (परमात्मा पिता) से कहा

कि बाबा, आप देखो तो ज़रा, मुझे तो ये व्यक्ति कुछ ठीक नहीं लग रहे हैं। पता नहीं, मेरे मन की शंका भी हो सकती है। कृपया बाबा आप ही जाकर देखो तो उन्हें। ऐसे मन ही मन बाबा से बातें करते हुए मैं पुन: घर के कार्यों में व्यस्त हो गई। थोड़ी ही देर में उनमें से दो व्यक्तियों ने घर की कालबेल बजाई। पूछने पर उन्होंने मेरे पति से अपने व्यवसायिक सम्बन्ध बताए और कहा कि आप उनसे अपने घर के फोन से ही हमारी बात करा दो। प्यारे बाबा की स्मृति से मन तो पहले ही सावधान हो चुका था इसलिए उन्हें द्वार के बाहर ही रोककर तथा द्वार बंद रखते हुए ही मैंने फोन पर पति से सम्पर्क किया और उस व्यक्ति के नाम, पते आदि की जानकारी देते हुए पति से पूछा कि क्या उन्हें अन्दर आने दूँ। उन्होंने कहा कि एक को

बुला लो और मुझसे बात करने दो। इस प्रकार एक व्यक्ति अन्दर आ गया। द्वार पर आते ही उसे घर में शिवलिंग स्थापित मन्दिर दिखाई दिया और फिर पहले कमरे में ही शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और मम्मा के चित्र दिखाई दिए। वह थोड़ा झुका और जूते खोल कर अन्दर आया। फिर फोन द्वारा मेरे पति से बात की। तब तक अन्य दो व्यक्ति भी अन्दर घुस गए और मुझसे पानी के लिए आग्रह किया।

शिव-स्मृति में मैं सबला बन गई

मैं पानी लेकर ज्योंहि उन तक पहुँची, उनमें से एक को हथियार लिए हुए आक्रमण की मुद्रा में अपनी ओर बढ़ते हुए पाया। मैंने मन ही मन पुन: बाबा से बात की कि देखा बाबा, ये व्यक्ति तो ठीक नहीं हैं, अब आओ। एक तरफ मुझे यह संकल्प मन में उठा और दूसरी तरफ उस व्यक्ति ने हथियार से मेरे गले पर वार करना चाहा। मैंने प्यारे बाबा को सामने रखते हुए हथियार की धार की तरफ से हथियार को पकड़ लिया और बाबा की टचिंग के अनुसार पानी का जग उस पर फेंक दिया। दो व्यक्ति मुझे घेर चुके थे। उन दोनों को मैंने धक्का मार कर गिरा दिया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना तब नहीं रहा जब मैंने देखा कि एक हल्के से धक्के से तीनों ही जमीन पर गिर पड़े थे। सो पुन: बाबा की टचिंग के आधार पर मैंने जोर से आवाज लगाई– भाभी बचाओ, भाभी बचाओ। मेरी तेज आवाज सुन उनमें से एक बोला– इसकी आवाज बहुत तेज है, भागो। चूँकि धार की तरफ से हथियार हाथ में था इसलिए धक्का मारते समय मेरा हाथ हथियार से कट गया था, एक बहुत लंबा चीरा पड़ गया और हथेली पर खून का फव्वारा फूट पड़ा था। इस अप्रत्याशित दृश्य को देखकर तीनों भाग खड़े हुए। इस प्रकार प्यारे बाबा ने अपनी बच्ची की सुरक्षा की। अबला समझी जाने वाली नारी जब शिव के साथ कम्बाइन्ड हो गई तो इतनी सबला बन गई कि तीन दुरात्माओं पर भारी पड़ गई। इस जीत से लौकिक और अलौकिक परिवार वाले तो बहुत खुश हुए ही परन्तु पुलिस भी हैरान थी कि एक महिला ने तीनों का विरोध कितनी सफलता और निर्भयता से किया! यह घटना सन् 2004 के दशहरे के कुछ दिन पूर्व ही घटी थी। सचमुच आसुरी वृत्तियों पर जीत पाने का यह सुन्दर उदाहरण बन गया। शहर के अधिकारीगण तथा अन्य लोगों को जब पता चला कि मैं राजयोग व ज्ञान की क्लास करने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाती हूँ तो वे भी प्यारे बाबा के बारे में जानने को उत्सुक हुए। आज हमारे शहर के कई सरकारी अधिकारी ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स कर चुके हैं। तो प्यारे भाइयो और बहनो, **बाबा को सदा संग रखें और उसके कार्यों में दृढ़ता व खुशी से सहयोगी बनें तो बाबा अपने बच्चों की कदम-कदम पर मदद करते हैं। दिल से कहो – मेरा बाबा और बाबा हर पल हाजिरा हज़ूर है। उस समय प्यारे बाबा ने हजार गुणा शक्ति मुझमें संचारित की; वह क्षण अद्भुत अनुभूति वाला था। प्यारे बाबा के प्रति कृतज्ञता से भरा मेरा मन गा रहा है –**

बाबा तेरी पहली नजर को सलाम,
उस घड़ी, उस डगर,
उस क्षण को सलाम,
जब आपकी
मीठी नजर मुझ पर पड़ी।
प्यारे बाबा तुझे
मेरा हज़ार अदाओं से सलाम।।

✦✦

जो दूसरों को दुःख देता है, वह दुःख पाता है। इसलिए सुख दो, सुख प्राप्त करो

मानसिक बंधन है – मोह

– ब्रह्माकुमारी विजय, बीकानेर

सृष्टि रंगमंच पर शरीर धारण करने वाली आत्माओं के बीच जो भाईचारे का आपसी सम्बन्ध है वही सच्चा प्रेम है। **प्रेम आत्मा का मूल स्वभाव है। प्रेम से ही सुख मिलता है और आत्मा का परमात्मा से सच्चा स्नेह हो तो परम सुख मिलता है। प्रेम की तुलना में मोह शरीर के भान पर आधारित अशुद्ध प्यार है, एक विकृति है। मोह दलदल की तरह है जो मानव को फँसाता ही चला जाता है। मोहवश मनुष्य की निर्णय शक्ति खत्म हो जाती है, बुद्धि मारी जाती है। मोह-बन्धन में बँधे मानव का दिल उस बन्धन से छूटने का प्रयत्न करता है, उसे अनुभव होने लगता है कि यह सभी दु:खों का मूल है। यदि हम परम सुखों का अनुभव करना चाहते हैं तो आत्मा के गुणों का चिन्तन करें। देह-सम्बन्ध और पदार्थों के प्रति मोह त्याग कर निर्मोही बनें।** इसी सम्बन्ध में एक प्रचलित कहानी इस प्रकार है–

एक राजा का राजकुमार वन-विहार करते-करते भूख और प्यास से तड़फने लगा तो एक साधु की कुटिया पर पहुँचा। साधु ने प्रेमपूर्वक उसका आतिथ्य किया और फिर पता पूछा। राजपुत्र ने कहा - "मैं निर्मोही नगर का रहने वाला, निर्मोही राजा का पुत्र हूँ।" सुन कर महात्मा जी चौंक पड़े कि कोई राजा होकर निर्मोही कैसे हो सकता है ? मैं अनेक वर्षों से इस वन में घोर तप कर रहा हूँ परन्तु मेरा मन तो अभी तक मोह रहित हुआ नहीं। महात्मा का शक मिटाने के लिए राजकुमार ने कहा - "आप नगर में जाकर परीक्षा कर लीजिए, इससे आपका भी कल्याण हो जायेगा।"

महात्मा जी राजकुमार के कपड़े लेकर, खून के दाग लगा कर राजधानी की ओर चल पड़े और वहाँ उपस्थित नगरवासियों को कहने लगा - "भाइयो, तुम्हारे भावी शासक को शेर ने खा लिया है, उसकी लाश मेरे आश्रम पर पड़ी है।" नगरवासियों ने उत्तर दिया - "अब तक इस नगर में न जाने कितने राजा हो गए हैं। इस सराय में आना-जाना तो लगा ही रहता है। हमारे शरीर का राजा तो हमारे साथ है जिसे कोई नष्ट नहीं कर सकता।" महात्मा जी यह उत्तर सुन आश्चर्यचकित तो हुए पर वे अभी और परीक्षा लेना चाहते थे इसलिए राजमहल की ओर बढ़ चले। उदास सूरत बना कर रानी को कहने लगे - "माताजी, आपकी गोद खाली हो गई है।" रानी ने कहा - "निजी स्वार्थ के ये नाते हैं, जिसे आप पुत्र कहते हैं उसे तो आप छोड़ कर आये ही हैं। जिसको मैं पुत्र कहती थी, उस आत्मा ने वस्त्र को त्याग दिया है। वह तो अविनाशी है। जो आया है उसे जाना ही होगा। जो सदा रहने वाली वस्तु है, उसे जानने का उपाय करो।"

महात्मा जी के मन में अभी भी शंका शेष थी इसलिए चुपके से फिर राजकुमार की पत्नी पास पहुँच गए और कहने लगे - "देवी, तुम्हारे पति को आज शेर ने खा लिया है।" राज्यवधू ने कहा - "महात्मा जी, हम आत्मा तो अजर-अमर हैं। आत्मा के नाते नारी और पुरुष का कोई भेद नहीं है। ये सम्बन्ध तो केवल शरीर तक ही सीमित हैं। अब उस शरीर में बोलने, सुनने, चलने की शक्ति नहीं रही तो उस शक्ति शून्य नश्वर शरीर को मेरा पति क्यों बताते हो। आज तक न मालूम कितनी बार मैं पति

बनी, कितनी बार वह पति बना। यह क्रम तो चलता ही रहता है।"

साधु के होश उड़ गए पर फिर भी साहस करके राजा की परीक्षा लेने दरबार में भी पहुँच गया और कहने लगा - "राजन्! आपके भविष्य के राज्याधिपति को आज शेर ने खा लिया है।" राजा ने कहा - "हे तपस्वी, जब बड़े-बड़े ऋषि-मुनि अपने शरीर को न बचा सके तो फिर साधारण जीव की तो बात ही छोड़ दो। इस संसार में अनेक राजा हुए हैं, आज उनकी कब्रों पर झाड़ियाँ उगी हुई हैं, बस यही उनकी निशानी बाकी है। देहभान के वश मानव का जीवन सदा अपूर्ण रहता है। महात्मा जी, अभिमान रूपी बोझ को छोड़ कर भगवान से प्रेम करना सीखो तभी आपका हृदय शुद्ध होकर आत्मिक प्रेम से भर जायेगा। फिर आप भी ऐसे ही निर्मोही बन जायेंगे जैसे कि इस नगर के लोग हैं।" महात्मा जी ने राजा से कहा - "राजन्, आपका पुत्र जीवित है। मुझे बड़ा संशय हुआ कि मैं घर-बार छोड़ कर भी मोहजीत नहीं बना। जैसा राजकुमार ने बताया था, यहाँ आकर ठीक वैसा ही पाया। अब मैं इस नगरी में रहते हुए आत्मा की सत्यता को जान कर जीवन का कल्याण कर सकूँगा।"

इस प्रचलित कथा का सार यही है कि मोह अंधा होता है। मोहवश मनुष्य अपना अकल्याण करता है और मरने से पहले कितनी बार मरता है। दु:खी रहता है। तुलसीदास जी ने कहा है - "मोह सकल व्याधिन कर मूला-ताते उपजै पुनि भवशूला।" मोह से छुटकारा तभी मिल सकता है जब आत्मिक दृष्टि-वृत्ति बनाई जाए और परमात्मा पिता से सम्बन्ध जोड़ा जाए। जन्म-जन्मान्तर का अविनाशी सुख भी तभी प्राप्त कर सकते हैं। ◆

तूने ज्ञान-बसन्त किया

– ब्रह्माकुमार देवीचन्द कौशिक, उत्तम नगर, दिल्ली

हे भोले भण्डारी, तेरी महिमा सबसे न्यारी है,
तू परमेश्वर, तू सर्वेश्वर पावन स्वस्ति तुम्हारी है।

है रूप एक, महिमा अनेक, सबकी विधियाँ अपनी प्यारी,
तू सबका, सब तेरे हैं, तू रचता जग रचना सारी।

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई तुझको शीश नवाते हैं,
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजा महिमा तेरी गाते हैं।

सब दिक् दिगन्त और धर्मग्रन्थ तेरी ही महिमा गाते हैं,
ज्योतिर्लिंगम् रूपों में तुझको ही शीश झुकाते हैं।

गुणवाची कर्त्तव्य प्रधान अनगिन सतनाम तुम्हारे हैं,
तुझ भाले भण्डारी के भरपूर सदा भण्डारे हैं।

दु:खद विकारी निशा अंधियारी का तुमने ही अन्त किया,
सतोप्रधान सृष्टि रच भू पर, तुमने ज्ञान-बसन्त किया।

नारी को लक्ष्मी रूप दिया, नर को नारायण बना दिया,
मानुष को देव बना करके, मस्तक पर दोहरा ताज दिया।

सिद्ध, ज्योतिषी, गुरु, महात्मा, देव और दुनिया सारी,
जिसको कोई दे सका नहीं, वह देते भोले भण्डारी।

मुर्दों को जीवन दान दिया, हारों को स्वाभिमान दिया,
इंसानों को ईमान दिया, तूने किसको क्या नहीं दिया ?

झुकना सीखिए

– ब्रह्माकुमार रामलाल, शान्तिवन (आबू रोड)

व्यक्ति के आँख, कान यदि खुले हों तो वह प्रकृति से भी बहुत कुछ सीख सकता है। पेड़ फलों से लदने के बाद झुक जाता है ताकि लोग फलों का लाभ आसानी से ले सकें। इसी प्रकार इंसान को, कर्मों के फलस्वरूप किसी पद की प्राप्ति हो जाती है तो पहला गुण उसमें झुकने का आना चाहिए। अगर नहीं झुकता है तो उसका नुकसान होता है। पेड़ के फल तक हाथ नहीं पहुँचते हैं तो उसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य पत्थर मारते हैं, पेड़ को आघात पहुँचाते हैं। ठीक इसी प्रकार पदासीन व्यक्ति अगर किसी के काम नहीं आता है या अपनी सत्ता का गलत प्रयोग करता है तो उसकी भी लोग ऐसी ही दुर्दशा कर देते हैं। भले ही लोग पत्थर नहीं मारते लेकिन उनकी बद्दुआएं पत्थर से भी अधिक घातक होती हैं।

सफलता प्राप्त करने से भी अधिक मेहनत उसे बनाये रखने में करनी पड़ती है। सफलता में अपने पुरुषार्थ के साथ-साथ दूसरों का भी बहुत योगदान होता है। उनके प्रति शुक्रगुजार न बनकर यह सोचना कि हमने अपनी ही क्षमता के बल पर यह पद पाया है, यह बड़ी भूल है। ऐसे अहंकारी लोगों की दशा उसी तरह हो जाती है जैसे तेज आंधी के समय अकड़े रहने वाले वृक्ष की होती है। जिसको झुकना आता है वह बच जाता है। इसलिए कहा जाता है–विरले ही सफलता को पचा सकते हैं। अधिकतर तो मद में चूर होकर अपने हित-चिन्तकों से भी दूरी बना लेते हैं। इसलिए झुकिए, झुकिए, झुकने में ही सार है। नम्रता वास्तव में महानता की निशानी है। इतिहास में जो भी महान पुरुष हुए हैं, उनमें नम्रता का गुण अवश्य ही विद्यमान रहा है। इसी गुण के कारण उनका नाम संसार में अमर हो गया और वे प्रेरणा पुरुष तथा मार्गदर्शक बन गए। महात्मा गाँधी, अब्राहम लिंकन आदि ऐसे ही नाम हैं। लेकिन इतिहास में ऐसे भी लोग हुए हैं जो स्वयं को सफल मानते रहे पर उनका नाम इतिहास के काले पन्नों पर लिखा गया। हिटलर, मुसोलिनी आदि की निर्दयता और अहम् से कौन परिचित नहीं है। इनके विनाश का कारण इनका अहंकार और सत्ता का दुरुपयोग ही मुख्यत: बना। अत: नम्रता में ही हमारी भलाई है, आदर है। अभिमान में बुराई है, बद्दुआ है, स्वयं का विध्वंस है।

दंभी लोग अपने बोल से कभी नहीं भरने वाले जख्म दे जाते हैं, इसका अहसास भी इन्हें कतई नहीं होता है। इन्हें तो यही लगता है कि जो कुछ हूँ, मैं ही हूँ, मेरे बिना यह संसार नहीं चल सकता परन्तु यह संसार तो सदा से चलता आया है और चलता रहेगा। ऐसे लोग किसी की शुभ सलाह भी नहीं मानते हैं। इनकी अहंकार रूपी चादर इतनी मोटी होती है कि अपनी भलाई की शुद्ध हवा को भी अन्दर प्रवेश नहीं करने देते हैं। इस संसार में सभी ऊँचे लक्ष्य की प्राप्ति में लगे रहते हैं और आगे-पीछे उन्हें अपने पुरुषार्थ व लक्ष्य अनुसार सफलता मिलती भी है। अत: सफलता के साथ-साथ नम्रता रूपी कवच को भी सदा ही धारण करके रखना चाहिए ताकि कोई हम पर वार न कर सके और हम सम्मानजनक जीवन जी सकें। अन्यथा हमारे दुर्गुण ही हमें इस कदर गिरा देंगे कि हम दुबारा उठने का नाम भी नहीं लेंगे। यह ठीक ही कहा जाता है कि ऊपर उठने पर नीचे के लोगों से संबंध मत तोड़ो क्योंकि गिरने पर वे ही काम आएंगे। जिनकी बराबरी में आप थे, वे तो आपके गिरने पर और ही खुश होंगे। लेकिन नीचे वाले लोग ही आपको उठायेंगे इसलिए उनके रहम, सम्मान और प्रेम के पात्र बने रहिए।

* * *

शक्ति निकेतन – एक जीवंत आश्चर्य
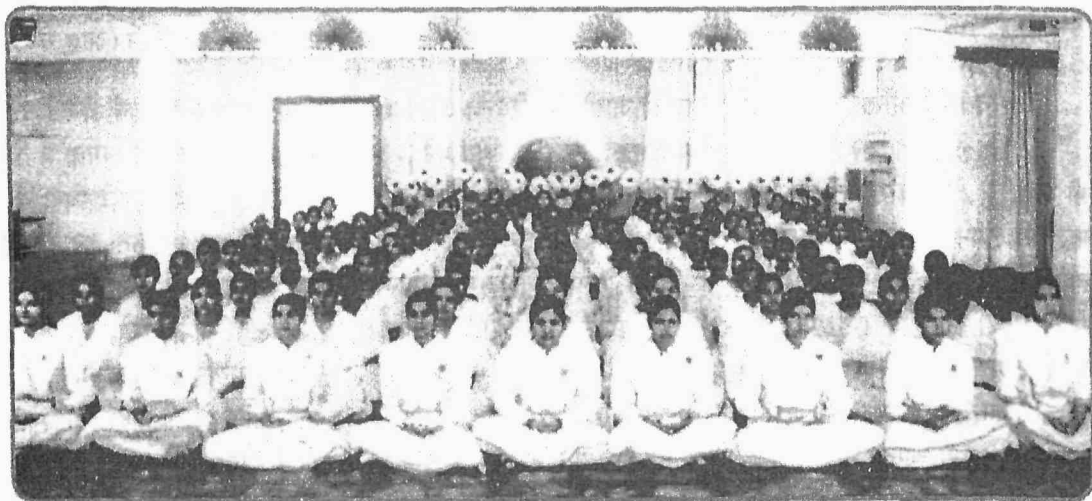
दिव्य जीवन कन्या छात्रावास, इन्दौर (म.प्र.)

जाने क्यों याद हो आया
मुझे मेरा बचपन,
जन्म के खूँटे से बँधी
उम्र की यह नाजुक डोर,
इतनी दूर तक खिंच आई है,
बिना टूटे और बिना गाँठ पड़े,
यही मेरे जीवन की गाढ़ी कमाई है।

आज दुनिया में थोड़ी-सी सफलता प्राप्त करने पर ही लोग डींगें मारना शुरू कर देते हैं कि हमारे पास ऐसी चीज़ है जो और किसी के पास नहीं। मैं आप सभी से पूछना चाहती हूँ कि क्या आपके पास ज़िन्दगी के कुछ ऐसे पल हैं जो आपने शक्ति निकेतन की गोद में गुज़ारे हों? 'शक्ति निकेतन' हिन्दुस्तान के खज़ाने का एक ऐसा कोहिनूर है जिसकी कीमत अनमोल है और जिसकी चमक अनुपम। सुरभि और सुगन्ध की व्याख्या कैसे हो सकती है? आत्मानुभूति को आज तक कौन रेखांकित कर सका है? मैं भी सोच रही थी कि शक्ति निकेतन की छाँव में बिताए जिन्दगी के क्षणों को कैसे लिपिबद्ध किया जाए? फिर भी अपनी अनन्त भावनाओं व संवेदनाओं को आज शब्दों में समेटने का पूर्ण प्रयास करूँगी।

इस अनुपम छत्रछाया ने बचपन से मेरे कोमल मानसपटल को सिर्फ इसी संकल्प से अनवरत गढ़ा है कि मेरा जीवन सारी दुनिया के सामने भगवत् छवि का एक आईना बने, मेरे इन हाथों को इस तरह साधा कि कहीं मेरा कोई भी तीर लक्ष्य से न भटक जाए, मेरे इस जीवन सफर में अनेकों ने मेरी हर विशेषता को सराहा पर इस जिन्दगी को एक मजबूत नींव दी तो बस इस शक्ति निकेतन के धरातल ने। दुनिया में जहाँ भी प्रगति का राजमार्ग खुला है वहाँ खतरा आया है, जिन्दगी के खतरों से हँस कर खेलने का अदम्य उत्साह दिया तो बस इसी धरोहर ने। आज इसने मुझे उस मंजिल पर ला खड़ा किया है जहाँ मेरे अन्दर हर वो योग्यता भर गई है कि मैं स्वयं भगवान शिव का वरण करने के लायक बन गई हूँ। मैं पहले क्या थी और अब क्या हो गई, यह सोच कर सहसा मेरे दिल से निकला कि शक्ति निकेतन तो एक जीवंत आश्चर्य है। मेरे जैसी कितनी ही कन्यायें इसकी गोद में पहुँच कर सम्मानित हो चुकी हैं।

शक्ति निकेतन से बात करना चाहा तो मैंने प्रश्न किया कि 22 वर्षों के इतिहास में, हे शक्ति निकेतन,

क्या तुमने कभी किसी को धोखा दिया? गहन चिन्तन के बाद उसने जवाब दिया – "पन्ना कोरा है।" मैंने पूछा – "कभी किसी से धोखा मिला?" पुन: जवाब आया – "यह पन्ना भी कोरा है।" फिर मैंने पूछा – "कितना प्यार पाया?" शक्ति निकेतन ने गर्व से कहा – "इस पन्ने पर तो तिल भर भी जगह नहीं है बाकी।" फिर मेरे पूछने पर कि कितनों को प्यार दिया, शक्ति निकेतन ने मन्द-मन्द मुस्कराते हुए कहा – "काफी खाली है यह पन्ना क्योंकि जिसने पाया वह पाकर आगे बढ़ गया और मैंने भी पलट कर देखा नहीं कि कभी वो कोई अपनी थी या पराई और ना ही कभी इस बात की परवाह की कि उसने क्यों नहीं लिखा अपना हिसाब मेरे इस पन्ने पर कभी, न कभी यह सोचा कि किसी ने मेरे इस नि:स्वार्थ प्यार का बदला दिया या नहीं।" इस जवाब को सुन कर मेरी आँखें भर आई और मैंने कहा – "वाह! शक्ति निकेतन वाह!! कमाल है तेरी कृतज्ञता की!

सचमुच शक्ति निकेतन, तेरी ही बदौलत मैं अपने जीवन में इन आदर्शों की गाँठ बाँध पाई हूँ कि **तप और साधना ही हमें ऋषियों की गरिमा प्रदान कर सकते हैं। बशर्ते हमारी साधना में कोई कपट व खोट न हो। हमारा ज़रा-सा खोट हमें भगवान के हृदय में प्रवेश करने से रोकता है। सच्चाई की छलनी में छन कर ही हम खुदाई हृदय को जीत सकते हैं** और यही कुमारी जीवन की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है। दुनिया में हर कन्या का यही सपना होता है कि मैं शिव जैसे पति का वरण करूँ। लेकिन मैं आप सभी से यह कहना चाहती हूँ कि शिव जैसा पति क्यों, स्वयं शिव का ही वरण क्यों न कर लिया जाए। कुमारी तो उस विधाता की एक ऐसी अनमोल, अनुपम और अकथनीय कृति है कि त्याग उसका स्वभाव है, तो दान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत है, तो बलिदान उसका कर्म। हर कुमारी को ये विशेषताएँ भगवान की ओर से विरासत में मिली हुई हैं। हरेक कुमारी ऐसा सौभाग्य लेकर ही पैदा होती है। परन्तु केवल ईश्वरीय देन से कुछ नहीं होता। ईश्वर की इस देन को साधना और परिश्रम के साथ सम्भाल कर रखने तथा विकसित करने की जिम्मेदारी स्वयं कुमारी की ही होती है। परन्तु अफसोस इस बात का है कि आज कन्यायें अपने जीवन के इस मूल्य की अवहेलना करते हुए दुनिया की भीड़ का अंधानुकरण कर रही हैं। सिर्फ दुनियावी दौड़ में खुद को विलुप्त करती जा रही हैं। दौड़ना गुनाह नहीं है लेकिन एक सही दिशा का चयन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गाँधी जी ने अगर अपने बचपन में, शिक्षक के कहने पर नकल करके सवाल कर लिया होता तो उनके जीवन का गणित ही फेल हो गया होता। कहीं ऐसा न हो कि दूर तक जीवन सफर तय करने के बाद हमें अपनी मंज़िल का होश आए, तब जिस चौराहे से हम भटके थे अगर पुन: वहाँ लौटना चाहेंगे तो याद रखिए, लौटना असम्भव होगा और लौटने की कोशिश करना नासमझी। इसलिए पश्चाताप की आग में जलने से बचने का एक ही मार्ग है कि राह चलने से पूर्व मेरी बहनो! ज़रा सोच लो। बाद में हताशा मिले, ऐसे रास्ते से बचने का प्रयास करना ही बुद्धिमानी है। इसमें हमें किसी नवपथ का निर्माण नहीं करना है। सिर्फ भगवान द्वारा रचित आदर्श राह का अनुकरण ही करना है और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने कन्याओं को निरादर की गर्त से निकाल शक्ति निकेतन रूपी एक विलक्षण ठौर दी है जहाँ पवित्रता का वास है। माना कि आपने सही दिशा का चयन भी किया और सच्ची राह का भी अनुसरण किया लेकिन यदि आपके पास साधन अनुकूल नहीं है तो भी आप साध्य तक नहीं पहुँच पायेंगे। पर निश्चिन्त रहिए, यह शक्ति निकेतन तो वो ठौर है जो हर अनुकूल साधन जुटाए बैठा है, आपको ईश मिलन के गन्तव्य तक पहुँचाने के लिए। हर कुमारी से मेरी विनती है – गफलत छोड़ो और इस बात पर गर्व करो कि हम उस देश में जन्मे हैं जहाँ प्रभु की ऐसी अद्वितीय

कृति यह शक्ति निकेतन बसा है। आओ, हम इसका अभिषेक करें, आचमन करें।

आपकी जानकारी के लिए शक्ति निकेतन का संक्षिप्त परिचय देकर, मैं आपके मन में उठ रहे सभी प्रश्नों को विराम दे देना चाहूँगी। शक्ति निकेतन की दहलीज पर कदम रखते ही आपको ऐसा महसूस होगा कि उसके आँचल में लघु भारत सिमट गया हो। जी हाँ, कश्मीर से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण भारत के लगभग 23 प्रान्त जैसे दिल्ली, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, हिमाचल, त्रिपुरा, आन्ध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, आसाम, कर्नाटक, तमिलनाडू, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उत्तरांचल आदि तथा विदेश के तीन देश दुबई, नेपाल और बुनई (मलेशिया) की भी कुल 150 कन्यायें इस शक्ति निकेतन की शरण में स्वयं को साक्षात् भगवत् छवि का आईना बनाने हेतु पूर्ण प्रयासरत हैं। यहाँ भौतिक कलाओं जैसे – पाक कला, चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला, गायन, वादन, अभिनय, निबन्ध, भाषण, नाटक, कविता, वाद-विवाद, गृहसज्जा, पेंटिंग, दूरभाष, स्वागत प्रबन्धन, व्यवहारिक सूझ, मेहमान-नवाजी आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग में परिपूर्ण बना कर उनके अन्दर एक खरे सिक्के की खनक पैदा कर दी जाती है ताकि हर साधारण कुमारी भी उनकी उत्कृष्ट जीवन शैली से अपनी ज़िन्दगी का मिलान कर खुद को बहुमूल्य साबित कर सके। यहाँ छठवीं से लेकर स्नातक स्तर तक की कन्यायें अध्ययनरत हैं। इस वर्ष छात्रावास का लौकिक परीक्षा परिणाम 96% रहा, 150 कन्याओं में से 85 कन्यायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई और लगभग 26 कन्याओं ने अपने-अपने विद्यालयों में प्रथम, द्वितीय स्थान एवं विशेष योग्यताएँ प्राप्त की हैं। बी.ए. फाइनल में भी एक कन्या ने प्राविण्य सूची में पाँचवा स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय स्तर पर भी छात्रावास का नाम गौरवान्वित किया है।

इस अनुपम रचना शक्ति निकेतन के उद्गाता ओमप्रकाश भाईजी जिनके भीतर एक ऐसा खरा व्यक्तित्व है कि उनके सानिध्य से मामूली कन्या भी मामूली नहीं रह जाती और आदरणीया करुणा दीदीजी एवं शकुन्तला दीदीजी के कोमल हाथों के स्पर्श से जुड़ी हैं मेरे जीवन की न जाने कितनी ही अमिट यादें। वे तो शान्ति का, ताजगी का और ताकत का ऐसा अजस्र झरना हैं जो कभी क्षीण हो ही नहीं सकता। अभिभावक सम इन दिव्य आत्माओं की पालना में पल कर हम कुमारियाँ शक्ति निकेतन के गगनभेदी यश और कीर्ति की सुरभि को इस कदर बिखेरेंगे कि क्षितिज का कोना-कोना इस गूँज से गूँज उठेगा कि वाह! यह खुदाई करिश्मा वाह!! ओ शक्ति निकेतन! आज इस लेख को पढ़ने वाले तमाम पाठकों की दुआएँ तुम पर बरसें कि तुम दीर्घायु हो! दीर्घायु हो!! दीर्घायु हो !!! छात्रावास, शक्ति निकेतन में नई कन्याओं के प्रवेश हेतु मार्च, अप्रैल में सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया मई-जून माह में ही प्रारम्भ हो जाती है।

– ब्रह्माकुमारी मधु

: अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

दिव्य जीवन कन्या छात्रावास, ओमशान्ति भवन, न्यू पलासिया, इन्दौर (म.प्र.) 452001, **फोन** : (0731) 2531631
फैक्स : (0731) 2430444; **मो** : 98931 53163
ई-मेल : bkomprakash@vsnl.net
indorezonehq@sancharnet.in

गतांक से आगे......

बचाइये, कन्या-भ्रूण को काल के गाल से

– ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

कन्या भ्रूण-हत्या के जटिल प्रश्न को सुलझाने के लिए माता-पिता, समाज, सरकार तथा कन्या को भी अपनी सोच बदलनी पड़ेगी। क्योंकि सोच से उपजी कुमान्यताओं को उखाड़े बिना कन्या अथवा नारी मान्य नहीं बन पाएगी। आइये देखें माता-पिता, समाज, सरकार तथा स्वयं नारी इस सम्बन्ध में क्या करे –

माता-पिता क्या करें ?

माता-पिता लड़के की चाहत में अन्धाधुन्ध सन्तान वृद्धि में न लगे रहें। परिवार छोटा रखें, पहले दो बच्चे, चाहे कन्या हों या कुमार, उन्हें ईश्वरीय अमानत समझ पालना दें। कुछ दिन पहले एक हिन्दी पाक्षिक 'यशलोक' में एक समाचार पढ़ने को मिला था कि नेपाल के एक गाँव हाजीपुर में एक महिला ने पुत्र की चाह में 19 बेटियों को जन्म दिया। विचार कीजिए, 19 बहनों के एक इकलौते भाई का क्या हाल होगा ? वह किस बहन के लिए क्या कर पाएगा ? और यह भी तो निश्चित नहीं है कि 20वाँ बेटा ही होगा, बेटी भी हो सकती है। अत: समाज में प्रतिदिन घट रही घटनाएँ इस विवेकहीन लकीर को पीटने से बचने की चेतावनी दे रही हैं। एक अन्य परिवार में घटित घटना देखिए – एक माता के तीन पुत्र थे। तीनों ही चरित्र के नाम पर दिवालिए थे। बड़े पुत्र की मृत्यु शराबखोरी से हुई और वह केवल कन्याओं को पीछे छोड़ गया। उन कन्याओं के भाई न होने का दु:ख सबको खलता रहा। दूसरा पुत्र शारीरिक व्यसनों से मुक्त था पर रिश्वत के पैसे से खूब कार-कोठी बनाई थी। उसकी आकस्मिक दुर्घटना में मृत्यु हो गई तथा वह भी केवल कन्याओं को पीछे छोड़ गया। यहाँ भी पुत्र की कमी सबको खलती रही। तीसरे पुत्र की मृत्यु शराबखोरी तथा उससे उपजी कामुकता से हुई। उसने अपने पीछे दो पुत्र छोड़े। इस प्रकार तीन भाइयों के 8 बच्चों में ये दो लड़के ही सबकी आँखों के तारे थे परन्तु इन दोनों में से छोटे वाले ने 20 वर्ष का होते-होते खुदकुशी कर ली। पुत्रएषणा से त्रस्त भारतीय समाज प्रतिदिन व्यसनों-विकारों में अपने लालों को खो रहा है फिर भी कन्याओं को हेय दृष्टि से देखे जाने की मनोवृत्ति जारी रहती है। मैं यहाँ इस दुराग्रह से भी ग्रसित नहीं हूँ कि कन्याएँ सदा ही सद्गुणी होती हैं और उनमें कोई चारित्रिक कमी नहीं होती परन्तु इतना निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में वे बेहतर सिद्ध हो रही हैं। अत: माता-पिता पुत्र को प्रथम दर्जे का और कन्या को दूसरे दर्जे की न समझें। पुत्र के लिए महँगा स्कूल, अच्छा खाना-कपड़ा और कन्या के लिए सस्ता स्कूल, कम खाना-कपड़ा, यह पक्षपात करना छोड़ें। पुत्री के परीक्षा में प्रथम आने पर या ईनाम पाने पर भी उतने ही प्रसन्न हों जितने कि पुत्र के ईनाम पाने पर। एक अध्यापक महोदय प्राथमिक पाठशाला में पढ़ाते थे और दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि के विरुद्ध खूब भाषण बच्चों के सामने करते थे। मैं भी उनकी विद्यार्थी रही। उस अध्यापक ने अपनी 14 वर्ष की कन्या की शादी उन्हीं दिनों कर दी। मिलने पर मैंने सहज आश्चर्य से पूछा – "सर, यह आपने क्या किया, आपका आदर्श तो यह नहीं था ? आप तो कन्या की उच्च शिक्षा, सम्पूर्ण मानसिक, बौद्धिक विकास के पक्ष

में थे परन्तु आपने तो अपनी लाडली को 14 साल में ही परिवार की जिम्मेवारी उठाने के दुष्कर कार्य में डाल दिया।" उन्होंने बिना किसी झिझक के उत्तर दिया – "तुम्हारा तो मैं शिक्षक हूँ, परन्तु अपनी कन्या का पिता हूँ। शिक्षक के रूप में जो कहा वह पिता के रूप में मैं भी पालन करूँ, इसमें बहुत मुश्किलातें आती हैं, पिता रूप में मुझे कई दबाव झेलने पड़ते हैं।" तो देखिए, आज अधिकतर अभिभावक ही कन्यारत्नों को मान नहीं देते। ससुराल और समाज की बड़ी यातनाओं से पहले घर ही उनके लिए यातनागृह बन जाता है। लेकिन ऐसे परिवार भी हैं जो आर्थिक रूप से समर्थ हैं और कन्या को अच्छी भौतिक पालना देते हैं। वे उसे आत्मिक रूप से सशक्त बनाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा भी अवश्य दिलाएँ ताकि उसका सर्वांगीण विकास हो सके।

समाज क्या करे?

समाज का हर व्यक्ति हर नारी को चाहे वह किसी भी आयु, घर, जाति या देश की हो, देवीस्वरूप समझे। उसमें माँ जगदम्बा का रूप देखे, उसे जगत को जन्म देने वाली, पालना देने वाली और प्रभु की प्रतिनिधि समझे। **जो सामाजिक संगठन नारी सौन्दर्य की प्रतियोगिताएँ करते हैं वे नारी की आध्यात्मिक जागृति, उसके मनोबल, सद्गुण, देश-प्रेम, त्याग, तपस्या, नि:स्वार्थ सेवा जैसे विषयों को लेकर भी प्रतियोगिताएँ आयोजित करें ताकि सुन्दर दिखने की होड़ की तरह गुणवान, चरित्रवान, त्यागमूर्त, तपमूर्त बनने की होड़ भी नारियों में लगे।**

सरकार क्या करे?

सरकार, नारी को भौतिक शिक्षा प्राप्त कर ऊँचे ओहदों पर पहुँचने, राजनीति में आरक्षण प्राप्त करने और आर्थिक रूप से सशक्त करने के साथ-साथ उसे चरित्र की दृष्टि से सुदृढ़ बनाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा के केन्द्र खोले। हर नारी निकेतन में, महिला छात्रावास में, नारी संस्थानों में आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा उसे जागृति दी जाए कि वह अपने को देह से न्यारी आत्मा समझे। यदि नश्वर शरीर की स्मृति में रहेगी तो उमसें भय पैदा होगा। अपने को कमजोर समझेगी तो कामजनित कुदृष्टि का शिकार होगी। आत्मा समझने से निर्भय बनेगी और कामकुठाराघात से बचाने वाला पवित्रता का बल उसमें आ जाएगा। हर मानव का पहला अधिकार जीने का है परन्तु इसके साथ इज्जत से जीने, पवित्रता के साथ जीने के अधिकार को मान्यता मिले। अत: नारी की इच्छा के विरुद्ध यदि कोई उसकी पवित्रता पर हमला करता है तो यह भी मानवाधिकार का उल्लंघन माना जाए फिर चाहे वह पति ही क्यों न हो। इस सम्बन्ध में मानवाधिकार संगठन को हस्तक्षेप करना चाहिए।

स्वयं नारी क्या करे?

आत्म-नियन्त्रित रहे – नारियाँ, पश्चिमी सभ्यता की ओढ़नी ओढ़ कर अपने को पुरुष के हाथों का खिलौना ना बनाएँ। नश्वर देह को सजाने, सँवारने और फिर पुरुष की पाप भरी आँख को आकर्षित करने का पाप कर्म न करें। **सीता, सती, अनुसूईया, मीरा आदि की तरह सादगी को अपनाकर विचारों को महान बनाएँ। साधन और पदार्थों की लोलुप न बनें, अधिक संग्रह न करें। देह के सम्बन्धों के मोहपाश में बँध कर, आत्मा को सशक्त करने वाले धर्म-कर्म से मुँह ना मोड़ें। सन्तान या अन्य सम्बन्ध के मोह के कारण झूठे बहाने लगा कर परमात्मा से बेमुख ना हों। अश्लील पत्रिकाएँ न पढ़ें, सिनेमा, होटल, बाजार आदि में जाकर निर्लज्ज न बनें, मन पर नियन्त्रण रखें, जिह्वा पर नियन्त्रण रखें। माँस, मदिरा तथा बीड़ी आदि व्यसनों की शरण न लें। ऐसे गन्दे व्यसनों में फँसे पुरुषों की नकल न करें। नकल करनी ही है तो उच्च नारियों की नकल करें जैसे कि लक्ष्मी**

बाई, मदर टेरेसा, दादी प्रकाशमणि तथा भारत की विभिन्न देवियाँ। ब्यूटी-पार्लर में पैसा गँवाने के बजाए किसी गरीब छात्र-छात्रा की पढ़ाई की जिम्मेवारी लें। उनका जीवन बनाने से जो आत्मिक सौन्दर्य निखरेगा वह युगों तक चलेगा। अपने प्रति कुछ माँगे नहीं, अपेक्षा न करें। पद, मान, ओहदा माँगने की नहीं, अर्जित करने की चीजें हैं। पात्रता पैदा करने पर पद आपे ही मिल जाता है। बिना पात्रता के मिला स्थान, मान अन्ततः हँसी, उपेक्षा और अपमान का पात्र बनाता है।

मन में शिकायतें न पालें – एक महिला ने शिकायत की (बड़ी मायूसी और निराशा के साथ) कि मैं जो कुछ हूँ, लोग मुझे समझते नहीं हैं और जो कुछ नहीं हूँ वह समझते हैं। मुझे मेरे पैसे के कारण देखते हैं परन्तु मुझमें जो मूल्य हैं उनको नहीं देखते। लेकिन इसमें उदास होने की कोई बात नहीं है। देखिए, मन्दिर में मूर्ति रखी है उस पर सोने-हीरे के गहने चढ़े हैं, एक चोर की नजर ना तो देवी के वरदानी नयनों पर जाती है, न वह उसके दर्शन करके धन्य होना चाहता है, न उससे गुणों की प्रेरणा लेता है, वह तो उसका मुकुट उतार कर भागता है। इससे देवी की कद्र कम नहीं हुई। दृष्टि चोर की खराब है तो देवी दुःखी क्यों हो? वह तो तब भी वरदानी थी अब भी वरदानी है। अतः अपने स्वमान में, निजी उत्कृष्ट स्वरूप में टिके रहिए। दिव्य स्वरूप पर लम्बे समय की आपकी दृढ़ता ही आपको मान्यता दिलाएगी। लोग हिला कर तो देखेंगे ही। जो हिल जाएगा वह कमजोर कहलाएगा, जो नहीं हिलेगा वह विजय-माला पहनेगा। अतः आलोचनाओं से मत डरिए।

चरित्र के साथ सौदा न करें –बीस वर्ष की एक बहन ने बताया कि वह अपनी दो वर्ष की कन्या सहित माँ के पास रहती है क्योंकि पति कमाता नहीं है और व्यसनाधीन है। उसने 5 वर्ष पहले की एक घटना सुनाई। वह 15 वर्ष की थी। धनाढ्य आदमी के घर बर्तन माँजने जाती थी। एक दिन माँ बहुत बीमार पड़ी। दवाई के लिए पैसों की जरूरत थी। धनी आदमी से पैसे माँगे। उसने पैसे तो दिए पर अपनी वासना का शिकार उसे बनाया। वह पैसे लेकर घर आई, माँ को दवाई दी और मन का दुःख यह सोच कर भूल गई कि चलो माँ को दवाई मिल गई। उसने सोचा कि शरीर बेचना यदि पाप है तो माँ की सेवा करना एक पुण्य भी है। मैंने पूछा – क्या माँ अब ठीक है? उसने कहा कि अभी भी बीमार है। अब मैं मेहनत-मजदूरी करके माँ का, अपना और अपनी बच्ची का पेट पालती हूँ। मेरे पिता भी व्यसनी थे, उन्होंने भी माँ की और मेरी सम्भाल नहीं की थी। यहाँ प्रश्न उठता है कि 15 वर्ष की उस नाबालिग कन्या की वह सोच क्या उचित थी? उस जैसी स्थिति में फँसी अनेकानेक आत्माओं का यह प्रश्न हो सकता है कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? इतिहास और संस्कृति की पृष्ठभूमि से इस समस्या का क्या समाधान हो सकता है? अध्यात्म का रुख इस सम्बन्ध में किस प्रकार का है?

आदमी के मूल्य मजबूरी में भी उसे मजबूती देते हैं। मात्र श्वांसों का भार ढोने वाला व्यक्ति ही मूल्य-हनन की स्थिति को उचित करार दे सकता है, नहीं तो रानी पद्मिनी का उदाहरण हमारे सामने है। उसने पद, प्रतिष्ठा, सुन्दर शरीर की चाहना न रख कर अपने शील और मर्यादा को सर्वोपरि समझा। विदेशी आततायी को उसकी मुट्ठी भर राख के अलावा कुछ न मिला। यदि माँ बीमार है तो उसके लिए कम पैसों पर भी मजदूरी की जा सकती है, कड़ी मेहनत वाला काम किया जा सकता है। परन्तु सभ्य समाज या अध्यात्म और ईश्वरीय नियम या मानव का व्यक्तिगत दीन-ईमान कभी भी इस बात की इजाजत नहीं दे सकते कि पहले शरीर बेचो और फिर उस पैसे से किसी की पालना करो। **ऐसे पाप की कमाई से**

खरीदी गई दवाई भी बेअसर हो जाती है। दवा से ज्यादा दुआ काम करती है, जो हैवानियत का हौसला अफजाई करने के बजाए इन्सानियत के मार्ग पर चलने से मिलती है। देर हो सकती है पर सफलता इन्सानियत, नेकनियत तथा इन्साफ के मार्ग पर चल कर ही मिलती है। फिर, उसके कहे अनुसार तो माँ आज भी बीमार है पर अब वह मजदूरी करके तीन की पालना कर रही है। तो टेढ़ी अंगुली से घी कितने दिन निकलेगा? आखिर तो दीर्घकालीन आधार को ही स्वीकार करना पड़ेगा, जो अपनी मेहनत का है। अल्पकाल के आधार तो आँधी के झोंके के समान होते हैं जो आत्मा की शान्ति, खुशी और चरित्र को अपने साथ उड़ा ले जाते हैं और हम हाथ मलते रह जाते हैं।

जो पुरुष मजबूरी का फायदा उठा कर नारी के मान-सम्मान का सौदा करता है वह वास्तव में कीचक और रावण ही है, जो कुल सहित दु:खद विनाश को पाता है। जो नारी भी किसी दैहिक सम्बन्धी की पालना के बहाने की ओट लेकर या अन्य किसी बात से आत्मा की मजबूती खोकर संसार को वेश्यालय बनाने के रास्ते पर बढ़ती है तो वह वास्तव में ज़हर कमाती है और उस धन का उपयोग जिसके लिए भी करती है उसे भी मानो ज़हर पिलाती है। इस ज़हर के पीने पिलाने से समाज पाप के गहरे गर्त में धँसता है। शास्त्रों में जो कहा गया है कि पृथ्वी रसातल में चली गई थी उसका वास्तविक अर्थ यही है कि पापों से बोझिल हो जाती है। मानव का मूल्यबोध नष्ट होना ही उसका रसातल में चले जाना है। इसलिए धन आता है इससे खुश नहीं हो जाओ बल्कि कैसे, किस विधि से आता है यह बार-बार सोचो।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि जब तक समाज और स्वयं नारी भी मानवीय, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से सुसज्जित नहीं होंगे तब तक महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों की और सामाजिक विषमताओं की कड़ी नहीं टूटेगी। समाज और नारी का नैतिक-आध्यात्मिक सशक्तिकरण किए बिना भ्रूण-हत्या या अन्य किसी भी समस्या को मिटाने का प्रयास हथेली पर चने उगाने के समान निरर्थक होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का पिछले 69 वर्षों का यह दृढ़ अनुभव है कि नारी शिव के साथ जुड़ कर, शिव-शक्ति बन कर ही सुखी हो सकती है।

(समाप्त)

❑

दीया जलाया जा सकता है

– ब्रह्माकुमार बगदीराम मदेल, रतलाम

काँटों से टकरा कर, फूल को पाया जा सकता है,
काजल की कोठरी में, दामन को बचाया जा सकता है।
अगर इरादे हों नेक, सच कहता हूँ यारो,
उजड़े चमन को बहारों से सजाया जा सकता है।।

किसी के मददगार बन, निराशाओं को मिटाया जा सकता है,
दूसरे के दर्द को अपना समझ, सहलाया जा सकता है।
किसी की अन्धेरी जिंदगी में, ज्ञान की मशाल जला कर,
सुख-शान्ति से जीने का हक, दिलाया जा सकता है।।

मेहनतकश इंसाँ हो गर, बंजर में हल चलाया जा सकता है,
रहने के लिए इस जहाँ में महलों की दरकार नहीं,
थोड़ी-सी जगह में आशियाँ बनाया जा सकता है।
रोशन करने अन्धेरों को,
हर घर एक-एक दीया जलाया जा सकता है।।

योगाभ्यास से मिला प्रकाश

– ब्रह्माकुमार हरीश, कुसुम्बा (महाराष्ट्र)

कई लोगों ने मुझसे प्रश्न पूछा कि ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ जाने के बाद आपको क्या प्राप्त हुआ ? इसका जवाब देते समय मैं सोचने लगा कि किन-किन प्राप्तियों के बारे में बताऊँ क्योंकि प्राप्तियाँ तो अवर्णनीय हैं, फिर भी एक विशेष प्राप्ति का उल्लेख करना मैं महत्त्वपूर्ण समझता हूँ जिसने मेरा पूरा जीवन ही बदल दिया, जिससे मुझे नई दिशा तथा नई प्रेरणाएँ प्राप्त हुईं। इस संस्था के द्वारा सिखाए गए योगाभ्यास से मेरा विद्यार्थी जीवन तीव्र उन्नति की ओर बढ़ गया। हरेक छात्र को जिसकी तलाश रहती है उस सफलता के द्वार तक मैं कैसे पहुँचा, आइए, देखते हैं –

मैं कक्षा दसवीं तक एक सामान्य छात्र की तरह पढ़ रहा था। मेरी शैक्षणिक योग्यताएँ बिल्कुल ही सामान्य थीं, मुझे पढ़ाई में अधिक रुचि भी नहीं थी। कोई भी अध्याय एक साथ ही पूरा पढ़ लूँ, ऐसा कभी हुआ ही नहीं। पढ़ाई में कमजोर होने के कारण अध्यापकों का बहुत डर लगता था और कक्षा में आखिरी सीट पर बैठता था। अध्यापकगण कभी प्रश्न पूछते थे तो काफी घबराहट होती थी। ऐसी स्थिति में मैंने दसवीं कक्षा सामान्य श्रेणी से उत्तीर्ण की। मेरी योग्यताओं से परिचित मेरे परिवार वालों को मेरा उत्तीर्ण होना ही काफी संतोषजनक लगा। बाद में ग्यारहवीं कक्षा के लिए कला विभाग में मेरा दाखिला कराया गया, मैं कॉलेज जाने लगा लेकिन मेरी गतिविधियों में कोई परिवर्तन नहीं आया।

अचानक मेरा सौभाग्य जगा और मुझे परिवर्तन की नई प्रेरणा प्राप्त हुई। उसी वर्ष मुझे लौकिक पिताजी के साथ 'राजयोग शिविर' के लिए माउण्ट आबू जाने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ जाते ही मेरी उन्नति के नए द्वार खुल गए। वहाँ के वायुमण्डल तथा व्यवहार से मैं काफी प्रभावित हुआ। एक प्रकार से मेरी सोई अन्तरात्मा पूर्णत: ही जागृत हो गई। योगाभ्यास के समय राजयोग कॉमेंट्री के द्वारा हमें अनुभव कराया गया, उस समय मुझे महसूस हुआ कि मैं शरीर से बिल्कुल अलग शक्ति हूँ। इस शक्तिसम्पन्न अनुभव ने योगाभ्यास में मेरी काफी रुचि उत्पन्न कर दी और वापिस लौटने के बाद मैं शाम को एक घण्टा नियमित रूप से सेवाकेन्द्र पर योगाभ्यास करने के लिए जाने लगा।

जैसे-जैसे मैं योगाभ्यास करने लगा वैसे-वैसे मेरे व्यक्तित्व में काफी परिवर्तन नजर आने लगे। मेरी कई आदतें बदलने लगीं। किसी से व्यर्थ बातें करना अब मुझे पसन्द नहीं आता था। एकाग्रता मुझे पढ़ाई की ओर आकर्षित करने लगी। धीरे-धीरे मैं मन लगा कर पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करने लगा। एक साथ दो-तीन घण्टे तक मुझे पढ़ाई के लिए स्थिर बैठते देख कर परिवार वालों को भी आश्चर्य होने लगा। अध्यापकों को जो अगले दिन पढ़ाना होता था वह मैं पहले से ही पढ़ कर जाने लगा और कक्षा में पूछे गए प्रश्नों का बड़े आत्म-विश्वास से जवाब देने लगा। इससे मेरे मन का डर धीरे-धीरे नष्ट होने लगा और कक्षा के होशियार छात्र भी मेरा संग पसन्द करने लगे। एक दिन मुझे मेरे अध्यापक ने खुद कहा – "आप अच्छा जवाब देते हो, इसलिए आगे बैठो।" उस दिन मुझे तो बहुत खुशी हुई लेकिन मेरे सभी साथियों (friends) को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। कक्षा ग्यारहवीं के परीक्षा-परिणाम में मुझे विशेष श्रेणी प्राप्त हुई। इस प्रकार, जैसे-जैसे मेरा परिवर्तन होता जा रहा था वैसे-वैसे योगाभ्यास में मेरी रुचि तथा परमात्मा में विश्वास बढ़ रहा था। मेरे इस परिवर्तन से मुझे अध्यापकण, सम्बन्धियों तथा परिवारजन से भी काफी प्रशंसा मिलती रही। इस प्रकार, मेरी प्रगति का यह सिलसिला जारी ही रहा और आगे चल कर मैंने बी.ए. में जिले में प्रथम स्थान तथा एम.ए. की पढ़ाई में विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा अन्य कलाओं में भी जैसे कि निबंध, काव्यरचना, लघुनाटिका आदि में भी विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। इन सभी उपलब्धियों को प्राप्त कराने वाला प्यारा परमात्मा ही है, उसी ने मेरा जीवन सँवारा है। बार-बार मेरे दिल से प्यारे शिव बाबा के लिए यही आवाज आती है कि 'बनाया बाबा तूने श्रेष्ठतम जीवन'। ✱✱

सरगम

– ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

मनुष्यात्मा की मौलिक वृत्ति, शरीर रूपी वाद्य से कर्म रूपी ऐसी संगीतमय ध्वनि निकालने की है जो कि जीवन में समय प्रति समय आने वाले सारे गम भुला कर जीवन को सुखदायी और मंगलमय बना दे। परन्तु वाद्य की ध्वनि कैसी निकलेगी, यह तो उसे बजाने वाले के हुनर या कला (संस्कार) पर निर्भर करता है। फिर भी मनुष्यात्मा जीवन में आ रहे उतार-चढ़ाव को संगीत के सात स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) के उतार-चढ़ाव की भाँति मधुर व मीठा बनाए रखना चाहती है अर्थात् आत्मा विषम व सम, दोनों परिस्थितियों में तालमेल बैठा कर जीवन का परम आनन्द लेना चाहती है। वर्तमान कलियुग में विश्व-व्याप्त तमोप्रधानता चरम पर है और साधारण मनुष्य की आत्मा हलचल में है। उसके मन रूपी समुद्र में व्यर्थ के तामसिक संकल्प हिलोरें ले रहे हैं। वह चिर-स्थाई सुख-शान्ति के लिए तड़प रहा है परन्तु अज्ञानता उसे लक्ष्य प्राप्त नहीं करने दे रही है। फिर भी आत्मा विश्राम या निद्रा के दौरान शान्त अवस्था को कुछ समय के लिए प्राप्त कर ही लेती है। परन्तु यह तो ऐसे ही है जैसे तपते मन रूपी तवे पर शान्ति रूपी जल की पड़ी कुछ बूँदें। तो आत्मा सुख-शान्ति की सरगम हेतु कौन से प्रयास (पुरुषार्थ) करे? ये प्रयास निम्नलिखित चार प्रकार के हो सकते हैं जो 'सरगम' शब्द के चारों अक्षरों स (सत्यता), र (रहमदिल), ग (गम्भीरता) और म (मनसा पवित्रता) से संबंध रखते हैं –

1. सत्यता – सत्यता ही सुख-शान्ति की नींव है जो इस ज्ञान से प्राप्त होती है कि क्या, क्या है (What is what), क्या किया जाना है और क्या नहीं, क्या हो रहा है और क्या होना चाहिए, क्या प्राप्त था और क्या खो गया है। सत्य हमेशा एक होता है और असत्य अनंत लेकिन एक सत्य, अनेक असत्यों को समाप्त कर देता है जैसे कि एक सूर्य सघन अंधकार को दूर कर प्रात: की लालिमा बिखेर देता है। आज मनुष्य, जीवन के बुनियादी व नैतिक सत्यों, जैसे झूठ नहीं बोलना चाहिए, चोरी नहीं करनी चाहिए, दूसरों को दु:ख, पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिए आदि से अवगत है परन्तु इन पर अमल नहीं करता। इससे जीवन में सरलता नहीं आ पाती। और जो सरल नहीं होगा उसमें सहजता भी नहीं होगी। सहज राजयोग की साधना के लिए मन-बुद्धि का सरल व सहज होना जरूरी है जो कि सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति व इसका अनुसरण करने से ही संभव है। सहज राजयोग फिर सन्तुष्टता दिलाता है जो कि अल्पकालिक नहीं बल्कि कल्प-कालिक होती है और 21 जन्मों तक संस्कारों में समाई रहती है।

2. रहमदिल – जिसमें संतुष्टता है, वही रहमदिल हो सकता है। **असंतोषी मनुष्य स्थूल सम्पदा को बढ़ाने में लगा रहता है और आवश्यकताओं को घटाना नहीं जानता। वह अनजाने में खुद पर निर्दयता करता रहता है। खुद को अलौकिक सुख-शान्ति से वंचित रखता है। जो खुद पर रहम करना नहीं जानता, वह दूसरों के प्रति रहमदिल कैसे बन सकता है?** राजयोग के अभ्यास से प्राप्त संतुष्टता मनुष्य को रहमदिल बना देती है। जो रहमदिल होगा उसमें रूहानियत भी होगी। रूहानियत ही दूसरों की नि:स्वार्थ सेवा कराती है और चलते-फिरते शिव परमात्मा की याद में भी टिकाए रखती है। देखा जाए तो रहमदिल स्वभाव और रूहानियत से मनुष्यों के

प्रति दया और परमात्मा के प्रति याद बनी रहती है।

किसी को भी याद करने से उसके जैसा आत्मिक स्वरूप बनता जाता है। जैसे कि स्कूल के शिक्षक को याद करने से छात्र में, उस द्वारा पढ़ाई जा रही विद्या का स्मरण हो आता है, गुरु को याद करते ही उसके प्रवचन मन में कौंध जाते हैं और पिता की याद आते ही पुत्र की स्मृति में बाप का स्नेह व नसीहतें ताजा हो जाते हैं। उसी प्रकार **शिव परमात्मा की ज्ञानयुक्त याद से उनके गुण और शक्तियों का प्रवाह आत्मा में होने लगता है । ये गुण व शक्तियाँ, आत्मा में दिव्यता ला कर फिर सम्पूर्णता, भरपूरता व परोपकार का भाव पैदा करती हैं और त्रस्त, दुर्बल आत्माओं के प्रति दया के रूप में प्रवाहित होने लगती हैं। दया को दया कहा ही तब जा सकता है जब यह आत्मा के द्वारा स्वत: अभिव्यक्त हो, अन्यथा दिखावटी दया में तड़पती आत्माओं को शीतलता प्रदान करने की शक्ति नहीं होती। कहा जाता है कि 'दुआ ही दवा है' परन्तु दुआ विशेष प्रयोजन हेतु कामना के रूप में की जाती है जबकि दया निष्काम व समर्पित भाव से की जाती है। अत: दया दृष्टि एक रामबाण दवा है जो स्वयं आत्मा को भी निरोगी करती है और अन्य आत्माओं के लिए भी दवा का काम करती है।**

3. गम्भीरता – आज मनुष्य व्यर्थ के असंख्य ताने-बाने में ऐसा फंसा हुआ है कि उसके मन में निरन्तर व्यर्थ संकल्पों की झड़ी लगी रहती है। उसमें व्यर्थ बातों के पूरा होने के प्रति अधीरता तो है परन्तु किसी समर्थ व अर्थपूर्ण लक्ष्य के प्रति गम्भीरता नहीं है। गम्भीरता ही एकाग्रता की जननी है और एकाग्र मन ही अविनाशी प्राप्तियाँ करा सकता है, फिर चाहे वह दु:खी अशान्त मनुष्यों की नि:स्वार्थ सेवा की बात हो या फिर सुख व शान्ति के दाता शिव से योगयुक्त होने की बात हो। योगयुक्त (याद) होना ही फिर रोगमुक्त (पावन) बनाता है। गम्भीरता का यह अर्थ नहीं कि खुशी गायब हो जाए और दिमाग पर किसी एक विचार बिन्दु के प्रति जोर डाला जाए। यह तो अन्तर्मुखी बन, मन को उमंग-उल्लास में रखते हुए किसी सकारात्मक या सृजनात्मक संकल्प के द्वारा स्वयं में शक्ति भरना है। इससे स्थूल इन्द्रियाँ और मुख की भाव-भंगिमा, भाव-हीन दिख सकती हैं परन्तु सूक्ष्म इन्द्रियाँ और आंतरिक अवस्था, चल रहे संकल्प के प्रभाव से प्रफुल्लित हो जाती हैं।

4. मनसा पवित्रता – अगर मन में पवित्रता है तो वाचा व कर्मणा में भी पवित्रता आ जाती है क्योंकि मन में उठे संकल्प ही वाणी में आते हैं और बोले जा रहे वाक्यों के अनुसार ही मनुष्य कर्म करते हैं। हाँ, यह बात भी सही है कि आज तमोप्रधान समाज में मनुष्य बोलता कुछ है और करता कुछ और है। मनसा पवित्रता ज्ञानेन्द्रियों से प्रभावित होती है जबकि कर्म, कर्मेन्द्रियों से प्रभावित होते हैं। मनसा पवित्रता से ही कर्मेन्द्रियाँ शीतल होती हैं और फिर विकर्म नहीं होते हैं। मनुष्य प्रतिदिन शारीरिक स्नान करते हैं ताकि शरीर साफ़ व स्वस्थ रहे। उसी प्रकार शरीर का संचालन करने वाली आत्मा को भी ज्ञान-स्नान की जरूरत होती है जिससे फिर मन साफ़ व स्वस्थ रहता है। परन्तु यह आध्यात्मिक ज्ञान-स्नान तब ही फायदेमन्द हो सकता है जब यह सीधे-सीधे इसके मूल स्रोत यानि परमात्मा शिव से प्राप्त हो। मनसा पवित्रता की दूसरी शर्त यह है कि ज्ञान-स्नान नित्य किया जाए। तीसरी बात है कि अन्य मनसा-पवित्र मनुष्यों का संग किया जाए। अगर मनसा-पतित मनुष्यों का संग मिलता है तो रूहानी ज्ञान के रंग से उन्हें रंगने का प्रयास किया जाना चाहिए। **जिस प्रकार होली खेलते समय दूसरे पर रंग डालने वाले व्यक्ति के हाथ पर रंग और भी पक्का चढ़ जाता है, उसी प्रकार, रूहानी ज्ञान बाँटने वाले मनुष्य के अन्तर्मन पर इस ज्ञान का रंग और भी पक्का चढ़ जाता है।**

अत: वर्तमान के तमोप्रधान वातावरण में आत्मा की पवित्रता बनाए रखने का सर्वोत्तम उपाय है रूहानी सेवा। आवश्यकता इस बात की है कि गम्भीरता से सत्य-असत्य की पहचान की जाए और स्वयं-प्रति व जग-प्रति रहमदिल बन पवित्रता की नींव पर 'पुरुषार्थ' व 'सत्-कर्म' की इमारत खड़ी की जाए।

सुख का अभाव ही दुःख है

– ब्रह्माकुमार ब्रह्मकिशोर, पूर्व न्यायाधीश, इलाहाबाद

यह सत्य है कि दु:ख का अपना कोई अस्तित्व ही नहीं है, सुख का अभाव-मात्र ही दु:ख है। या यूँ कहें कि सुख के ज्ञान का अभाव ही दु:ख है। जैसे प्रकाश का अभाव अन्धकार है, गर्मी का अभाव सर्दी है, स्वास्थ्य का अभाव रोग है और शांति का अभाव ही अशांति है। इसीलिए ही ताप और प्रकाश मापने के यंत्र हैं, सर्दी और अन्धकार मापने के नहीं। ठीक ही तो है, जो है ही नहीं, उसे भला कैसे मापा जा सकता है? यह एक विडम्बना नहीं, परमसत्य है।

जो लोग शरीर को ही सब कुछ मान लेते हैं, वे धन, सम्पत्ति और सुख-साधनों की प्राप्ति की होड़ में निरन्तर दौड़ते रहते हैं क्योंकि वे उसे ही सुख का आधार समझते हैं। जीवन का अन्त आने तक भी उन्हें सब इच्छित प्राप्त नहीं होता क्योंकि आकांक्षा की कोई सीमा नहीं। संसार के सबसे समृद्ध व्यक्ति को भी सन्तुष्टि नहीं। जब तक इच्छाओं, वासनाओं, कामनाओं की पूर्ण तृप्ति नहीं होगी, जो कि प्रकृति के अनुसार असम्भव है, तब तक असन्तोष बना रहेगा। यही दु:ख और अशांति का मूल कारण है।

हम पाँच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा वासनाओं की तृप्ति करते हैं और तदनुसार सांसारिक सुख भोगते हैं। जिस प्रकार सुख के साधन नाशवान हैं, उसी प्रकार शरीर, कर्मेन्द्रियाँ और वासनाएँ भी नाशवान हैं। सांसारिक सुखों की एक विशेषता यह है कि जो प्राप्त हो गया है या जो अपने पास है उसका आकर्षण घटता जाता है और जो प्राप्त नहीं हुआ और दूसरों के पास है, उसको प्राप्त करने की लालसा बनी रहती है तथा इसी भाग-दौड़ में सारा जीवन चला जाता है। दूसरी विशेषता यह है कि अपना बड़े से बड़ा सुख राई बराबर तथा छोटे से छोटा दु:ख पहाड़ बराबर लगता है। मूलत: वासनाएँ और असन्तोष ही दु:ख के कारण हैं।

जब हम कहते हैं कि हम दु:खी हैं, रोगग्रस्त हैं, हमें पीड़ा है तो हमारा अभिप्राय हमारे भौतिक शरीर से है जो कि प्रकृति के वशीभूत है। इसके विपरीत आत्मा का स्वभाव है– पवित्रता, शांति और आनन्द। ईश्वरीय ज्ञान कहता है कि तुम अपने को अशरीरी समझ योग द्वारा आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ो। ऐसा करने से शरीर के रोग, कष्ट, पीड़ा सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है और हम विचलित तथा दु:खी नहीं होते हैं क्योंकि तब हम आत्म-स्वरूप में स्थिर रहकर शांति और आनन्द का अनुभव करते हैं। हमें सांसारिक सुखों की प्राप्ति के पीछे मृग की तरह दौड़ने और भटकने के बजाए अपने अन्दर स्थित कस्तूरी अर्थात् आत्मिक शांति और आनन्द का अनुभव बढ़ाते जाना चाहिए। ✦✦✦

मज़हब नहीं सिखाता........पृष्ठ 05 का शेष

कर दिया या नहीं?" मोहम्मद साहब के चेहरे पर एक तेज आया, जैसे नागवारी के वक्त पर आता है। मोहम्मद साहब बोले– "कहता है कि हक अदा हो गया! जब तुम पैदा हुए थे, उस समय तुम्हारी माँ को दर्द की जो पहली लहर उठी थी, अभी तो उसका भी हक अदा नहीं हुआ है और तुम पूरी जिन्दगी की बात करते हो।" मैं जिन्दगी भर उनकी सेवा करूँ, आपकी भी करूँ, आपका भी कर्ज है मेरे ऊपर, यहाँ पर रहा, जितने लोगों ने मेरे साथ प्यार से व्यवहार किया, रास्ता बतलाया, यहाँ तक लाया, इन सबका कर्ज मुझे अदा करना है। मैं चाहता हूँ कि सृष्टि से हम जुड़े रहें और अच्छी नस्ल, अच्छे संस्कार आने वाली पीढ़ी को दें।

राजयोग के सत्रों में मजा आया

ज्ञान सरोवर में बहुत अच्छा लगा। मैंने बहुत कुछ सीखा, सीखना तो जिन्दगी भर चलता रहता है। सचमुच में यहाँ मैंने बहुत कुछ सीखा, बहुत कुछ हासिल हुआ, जिन्हें औरों तक मुझे ले जाना है। दादी जी के साथ मीटिंग जो थी उसमें भी उनसे बहुत प्रेरणा मिली। राजयोग के सभी सत्रों में बहुत मजा आया। योग की जो विधि बतलाई गई है, वो बहुत अच्छी है। भाई-बहनों की मोहब्बत का और संस्था का बहुत-बहुत शुक्रिया।

धैर्य रखिए

जीवन का मात्र 10% भाग हमारे साथ घटी घटनाओं से मिल कर बना है बाकी 90% भाग उन घटनाओं के प्रति दिखाई गई हमारी प्रतिक्रियाओं (reactions) से बनता है। घटनाओं पर आधारित 10% भाग हमारे हाथ में नहीं है। उदाहरण के लिए गाड़ी दो घण्टे देर से आई, इससे दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई। गाड़ी का समय पर आना किसी व्यक्ति के नियंत्रण में नहीं है लेकिन देर हो जाने पर जो प्रतिक्रिया होती है, वह हमारे हाथ में है। **देखा जाता है कि धैर्य की कमी के कारण छोटी-छोटी बातों में काम बिगड़ जाता है, आपसी संबंध खराब हो जाते हैं। परन्तु ऐसे मौके पर अपने धैर्य की कमी को स्वीकार करने के बजाए हम दूसरे कारणों को दोषी बना कर स्वयं को बचाने की कोशिश करते हैं।** आइए, एक कहानी के माध्यम से देखें कि स्थिति कैसे बिगड़ती है –

रमेश एक कम्पनी में प्रबंधक है। एक सुन्दर सुबह वह अपने परिवार के साथ नाश्ते के लिए टेबल पर बैठा है। दफ्तर का समय हो चुका है। वह जल्दी-जल्दी नाश्ता पूरा करके दफ्तर पहुँचने की कोशिश में है। इतने में क्या होता है कि नन्हीं बेटी के हाथ से चाय का कप छूट कर रमेश के सूट (suit) पर गिर जाता है। हाय .... कितना बड़ा हादसा! इस हादसे पर रमेश का नियंत्रण नहीं था। लेकिन हादसे के परिणामस्वरूप उत्पन्न प्रतिक्रिया आगे की स्थिति निर्धारित करती है। यह प्रतिक्रिया सकारात्मक भी हो सकती है, नकारात्मक भी। समाधानकारी भी हो सकती है और समस्या रूप भी। आगे की स्थिति देखिए क्या होती है – रमेश का रक्तचाप रॉकेट की तरह बढ़ गया और उच्चतम स्वर में, बेटी को डाँटता हुआ वह कपड़े बदलने के लिए पहली मंजिल पर अपने कमरे में चला गया। नीचे उतरने पर उसने पाया कि उसकी पत्नी, बेटी की आँखों से बह रही गंगा-यमुना को रोकने का और नाश्ता पूरा कराने का व्यर्थ प्रयास कर रही है। बेटी की स्कूल बस का भी समय हो चुका था। रमेश ने समझ लिया कि उसको स्वयं ही बेटी को शान्त करना होगा। बेटी को मनाने और नाश्ता कराने के बाद वह स्कूल बस की तरफ गया परन्तु वह तो जा चुकी थी। रमेश का तनाव और बढ़ गया। उसे समय पर दफ्तर भी पहुँचना था। पुत्री को गाड़ी में बिठा कर उसने यातायात के नियमों के विरुद्ध तेजी से कार दौड़ाई। लेकिन बीच में ही पुलिस ने गाड़ी को रोका और दण्ड लगा दिया। यह सब हो चुकने के बाद वह आधा घण्टा देर से दफ्तर पहुँचा। वहाँ सभी कर्मचारी उसकी इंतजार में थे। रमेश ने सुख की साँस ली कि चलो, कम-से-कम दफ्तर तो पहुँच गया हूँ। अब सभी को आज का कार्य सौंप देता हूँ लेकिन ..... यह क्या? दफ्तर वाली अटैची कहाँ गई? अटैची तो घर में ही छूट गई। उसके माथे पर पसीने की बूँदें उभर आई। वह पसीना पोंछते हुए कुर्सी पर मानो गिर-सा गया। कितनी भयानक रीति से आज का दिन शुरू हुआ! दफ्तर का समय समाप्त होने पर थका-मांदा रमेश घर लौटा तो देखा कि घर में सन्नाटा छाया हुआ था। पत्नी और पुत्री दोनों ही मौनव्रत लेकर अपने-अपने कार्य में व्यस्त थीं।

आइए, इस कहानी का थोड़ा विश्लेषण करें और जानें कि इस कहानी के मुख्य पात्र की ऐसी कंगाल स्थिति बनाने वाले कारण कौन-से हैं? (क) चाय का कप, (ख) रमेश की पुत्री, (ग) पुलिसकर्मी, (घ) स्वयं रमेश। आप भली-भाँति जानते हैं (घ) ही सही उत्तर है। क्योंकि चाय के कप पर रमेश का नियंत्रण नहीं था लेकिन कप गिरने के बाद केवल 5 सेकेण्ड में रमेश ने जो प्रतिक्रिया की उसके कारण सारा दिन बिगड़ गया। इस सारे परिदृश्य में बदलाव हो सकता था, कैसे? चाय का कप गिरते ही रमेश मीठी आवाज में कहता – "बेटी, चिन्ता मत करो (it's O.K. my dear) बस, थोड़ी सावधानी से कार्य करना सीखो।" ऐसा होने से बेटी समय पर नाश्ता करके बस पकड़ लेती और रमेश कपड़े बदल कर, पत्नी की शुभकामना लेकर समय पर दफ्तर पहुँचता (अटैची सहित)। फिर शाम को घर लौटने पर पत्नी और पुत्री की ओर से मुस्कान भरा स्वागत मिलता।

देखिए, दोनों घटनाओं ने एक ही ढंग से शुरू होकर भी कैसे अलग-अलग रास्ते पकड़ लिए। कारण? प्रतिक्रिया अलग-अलग है। यह है 10% और 90% का सिद्धान्त। **अब हम सभी अपने आपको गौर से देखें कि जीवन रूपी नाटक में हर रोज होने वाली आकस्मिक घटनाओं के प्रति हमारी प्रतिक्रिया कैसी रहती है? यदि हम संयत रह कर और मधुर मुस्कान रूपी ढाल पकड़ कर हर परिस्थिति का सामना करें तो परेशानियों से पार हो जायेंगे।** ★★★

पुरुषोत्तम संगमयुग – परमात्मा और धर्मस्थापकों के अवतरण और कर्त्तव्य में महान अंतर

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

हमने पिछले लेख में यह देखा कि संगमयुग में ही परमात्मा का सारे कल्प में एक ही बार अवतरण होता है। उसी अवतरण के समय के दिव्य कर्त्तव्यों का विभिन्न अवतारों के रूप में गायन होता है और इसलिए ही सारे कल्प में संगमयुग का समय ही सर्वश्रेष्ठ समय है।

परमात्मा के दिव्य अवतरण के समय को थोड़े विस्तार से जानना ज़रूरी है, तब ही हमें परमात्मा के दिव्य अवतरण की महानता और सार्थकता समझ में आयेगी। आज हमने अपने अहम् के विस्तार को चरम सीमा तक पहुँचाया है किन्तु मूल्यों को नष्ट कर दिया है। हम सभी ईर्ष्या और द्वेष फैलाने के अनुभवी बन गये हैं किन्तु प्रेम और स्नेह बढ़ाने में असफल रहे हैं। हम चन्द्रमा तक तो पहुंच गए हैं लेकिन अपने पड़ोसी के आँगन में जाकर उससे सम्बन्ध बाँधने में असफल हो गये हैं। बाह्य जगत पर हमने विजय प्राप्त करने की कोशिश की है किन्तु आंतरिक जगत के प्रति हम उदासीन ही रहे हैं। हम हवा और पानी के प्रदूषण के लिए चिंतित हैं किन्तु आत्मा जो प्रदूषित हुई है, उसको शुद्ध करने में असफल रहे हैं। हम बहुत तीव्रगति से काम कर सकते हैं परंतु धीरज रखना भूल गए हैं। हम बहुत पढ़े-लिखे तो बने हैं लेकिन चरित्र के क्षेत्र में बहुत पीछे हट गये हैं। हम चीज़ें तो बहुत इकट्ठी करते हैं लेकिन उनका प्रयोग बहुत कम करते हैं। जीवन जीने की आयु तो बड़ी है परन्तु सफल जीवन बनाने में हम असफल रहे हैं। हम अपने लिए तो बहुत सोचते हैं, परन्तु औरों के लिए विचार करने से पीछे हट गए हैं। हमने कम्प्यूटर बनाया परन्तु मन और बुद्धि के मालिक बनना भूल गए हैं। हमने अनेक प्रकार की डिग्रियाँ धारण की हैं किन्तु संस्कारों को श्रेष्ठ बनाना भूल गए हैं अर्थात् इस समय हमने अनेक मूल्यों की उपेक्षा की है और आज का समाज मूल्य शून्य समाज बन गया है। ऐसे समय पर परमपिता परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है।

द्वापरयुग से विभिन्न धर्मस्थापकों का परमधाम से इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आना शुरू होता है। वे आकर नैतिक पतन को थमाने की और समाज में नये मूल्य प्रतिपादन करने की कोशिश करते हैं परन्तु परमात्मा जो दिव्य कर्त्तव्य करते हैं, ऐसा कर्त्तव्य धर्मस्थापक नहीं कर पाए। परमात्मा संगमयुग पर अवतरित होकर तमोप्रधान समाज और सृष्टि दोनों को सतोप्रधान, सर्वश्रेष्ठ बनाते हैं और इसलिए ही उन्हें पतित पावन कहा जाता है। किन्तु धर्मस्थापक रजोप्रधान दुनिया की पतन की गति को थमाते हैं। वे समाज और सृष्टि के पाँच तत्वों को सतोप्रधान नहीं बना सकते हैं।

धर्मस्थापक जब सृष्टि रूपी रंगमंच पर आते हैं तो उनके साथ-साथ या उनके बाद उनके धर्म के अनुयायी भी आते हैं। बाद में उसी धर्म में अनेक सम्प्रदाय बनते हैं। धर्मस्थापक विभिन्न रूपों से अपने धर्म और सम्प्रदाय को सँवारने की कोशिश करते हैं। लेकिन परमात्मा, दिव्य अवतरण के समय पर सतयुग से लेकर अभी तक जन्म लेने वाली सभी आत्माओं को ईश्वरीय कर्त्तव्यों का ज्ञान देते हैं।

अभी हमें परमात्मा द्वारा मालूम पड़ा है कि धर्मस्थापक धर्म स्थापन के बाद विभिन्न नाम, रूप, देश, काल में जन्म लेते हैं और अपने धर्म की पालना और सुरक्षा का कर्त्तव्य

कलियुग के अंत तक करते ही रहते हैं। उन्हें अपने धर्म की पालना के लिए अनेक जन्म लेने होते हैं। इसलिए धर्मस्थापक जन्म-मरण रहित नहीं हैं। जबकि परमात्मा काल और जन्म-मरण के चक्र से सदा ही मुक्त हैं और परमात्मा सतयुग दैवी सृष्टि की स्थापना करते हैं लेकिन उसकी पालना करने के लिए सतयुग या त्रेतायुग में अवतरित नहीं होते हैं। वे अपने बच्चों में ही इतनी आध्यात्मिक शक्ति भरते हैं, उनका जीवन इतना श्रेष्ठ बनाते हैं तथा नई सृष्टि की पालना के लिए उन्हें इतना माहिर बनाते हैं कि इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर उनका कारोबार अखण्ड, अटल और निर्विघ्न रूप से 2500 वर्ष तक चलता है। जबकि धर्मस्थापकों का कारोबार सदा के लिए निर्विघ्न नहीं रहता है और कलियुग में अनेक प्रकार के विघ्नों को उन्हें सामना करना पड़ता है। परमात्मा सर्वशक्तिवान हैं किन्तु धर्मस्थापक सर्वशक्तिवान नहीं हैं। उन्हें संगमयुग में किसी-न-किसी तरह से परमात्मा के दिव्य अवतरण के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है और उसी सम्बन्ध के आधार से वे रजोप्रधान सृष्टि के समय पर धर्म स्थापन करते हैं। परमात्मा त्रिकालदर्शी हैं और उनके अवतरण के समय ही महाविनाश की बातें होती हैं। धर्मस्थापकों के अवतरण के समय पर ऐसा महाविनाश नहीं होता है। धर्मस्थापक 2500 वर्ष पुरानी सृष्टि रूपी रंगमंच की इमारत की मरम्मत तो कर सकते हैं परन्तु फिर से नई सृष्टि के रूप में उसका परिवर्तन नहीं कर सकते।

धर्मस्थापकों के अवतरण के बाद जब उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ती है, तब उनके विचारों को राजाश्रय मिलता है और तब उनके विचार तीव्रगति से समाज में फैलते हैं। परमात्मा के सतयुगी बच्चे तो 5000 वर्ष से इस सृष्टि पर आ चुके होते हैं और उनकी राजाई पुरानी दुनिया में प्रस्थापित नहीं होती है। नई दुनिया में उन्हें विश्व महाराजन और विश्व महारानी का पद प्राप्त होता है। धर्मस्थापकों के अनुयायी इसी कल्प में विभिन्न प्रकार के राज्य-भाग्य प्राप्त करते हैं, किन्तु विश्व महाराजन और विश्व महारानी का पद प्राप्त नहीं कर सकते हैं। उनकी राजाई खण्डित होती है और इसी सृष्टि पर होती है। धर्मस्थापक एक ही धर्म की स्थापना करते हैं, परन्तु परमात्मा द्वारा एक ही समय तीन धर्म अर्थात् संगमयुग पर ब्राह्मण धर्म, सतयुग में देवी-देवता धर्म और त्रेतायुग में क्षत्रिय धर्म की स्थापना होती है। परमात्मा के बच्चों को स्व-पसंद, लोक-पसंद और प्रभु-पसंद बनना पड़ता है, तब ही श्रेष्ठ पद के अधिकारी बनते हैं और पवित्रता रूपी मूल्य की संगमयुग में पूर्ण रूप से धारणा करनी पड़ती है। धर्मस्थापकों के अनुयायियों को पवित्रता रूपी मूल्य धारण करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। परमात्मा अपने बच्चों को वर्सा दिलाते हैं। धर्मस्थापक अपने अनुयायियों को इतना श्रेष्ठ वर्सा नहीं दिला सकते क्योंकि नियम तो यही है कि वर्सा बाप से मिलता है, भाई से नहीं।

धर्मस्थापकों का कर्त्तव्य इस सृष्टि पर द्वापरयुग से शुरू होता है परन्तु वे साक्षात्कार आदि नहीं करते हैं और न ही अपने ज्ञान का प्रचार, प्रेरणा आदि से करते हैं। परमात्मा का दिव्य कर्त्तव्य आंशिक रूप से द्वापरयुग से शुरू हो जाता है। वे भक्तों को उनकी भक्ति की भावना के अनुसार मन वांच्छित फल देते हैं और साक्षात्कार भी करतो हैं। यह साक्षात्कार कराने की दिव्य चाबी सिर्फ परमात्मा के पास ही है।

इस प्रकार पुरुषोत्तम सुगमयुग में परमात्मा का दिव्य अवतरण कितना महान और श्रेष्ठ है और इस महानता और श्रेष्ठता को समझने वाली, धारण करने वाली आत्माएँ भी श्रेष्ठ फल और पद की प्राप्ति करती हैं। इसलिए ही पुरुषोत्तम संगमयुग को हीरे-तुल्य माना गया है। किसी युग को पुरुषोत्तम संगमयुग नहीं कहा जाता है। पुरुषोत्तम संगमयुग को यथार्थ रूप में समझना ज़रूरी है। इसी दृष्टिकोण से मैंने इस लेखमाला का आरंभ किया है। ✤

रहमदिल

– ब्रह्माकुमार भगवान मण्डलोई, शान्तिवन

रहमभाव आत्मा के लिए पौष्टिक आहार का काम करता है जिससे दिनचर्या में ताजगी एवं तरावट बनी रहती है। यह गुण सबका प्रिय और सहयोगी बनाता है, इससे व्यक्तित्व निखरता है और सम्बन्धों में मिठास आती है। रहम माना ही नकारात्मक का सकारात्मक में परिवर्तन। रहमदिल बनने के लिए कुछ ध्यान देने योग्य तथ्य इस प्रकार हैं – 1. ईमानदारी से लोगों में विशेषताएं ढूंढ़ना और उन्हें पसंद करना। 2. दिन में जिनसे भी सम्पर्क-सम्बन्ध होता है, उनकी सूची बनाकर रात को सोने से पहले उनके प्रति रहम भरे संकल्प करना और उन्हें हर बात के लिए क्षमा करना अर्थात् उनको शुभ भावना देना। 3. यथासम्भव निर्बल आत्माओं के सहयोगी बनना।.4. उपरोक्त तथ्यों का अभ्यास तब तक करना जब तक कि वे संस्कार न बन जाएँ। रहमदिल व्यक्ति लाइट-हाउस का काम करता है। उसके आगे हर कोई अपने दिल को खोलकर रख देता है, जो भी उसके सम्पर्क या सम्बन्ध में आता है वह अपने को सुरक्षित, सुखी और समाधानस्वरूप स्थिति में महसूस करता है।

रहमदिल सदा विजेता है

अपने को बुराइयों से बचाना भी अपने ऊपर रहम करना है। इससे हल्केपन का अनुभव होता है, सिर पर प्रकाश का ताज चमकता है और बेफिक्र बादशाह की स्थिति का अनुभव स्वत: होने लगता है। ऐसा व्यक्ति कभी उदास नहीं होता क्योंकि उसे अप्रत्यक्ष रूप से दुआएं मिलती रहती हैं। परमात्मा रहम का सागर है, हमें भी उनके जैसे गुण धारण करने हैं। अपने प्रति और दूसरों के प्रति रहमभाव लाना अर्थात् स्वयं का सम्मान रखना और दूसरे को सम्मान देना तथा दूसरे के दिल में स्नेह का बीज बोना। रहमभाव से स्वमान में सहज ही स्थित हो सकते हैं। अग्रलिखित ईश्वरीय महावाक्यों में भरपूर रहमदिली झलकती है – **'मैं इस धरा पर आया हूँ, आत्माओं की सेवा कर उन्हें शुद्ध बनाने, आत्माओं के दुष्कर्मों रूपी गन्दे कपड़े धोने। तुम जब भी मुझे याद करोगे, मैं तुरन्त मदद के लिए हाज़िर हो जाऊँगा, मैं तुम बच्चों का सेवाधारी हूँ। तुम्हारा एक कदम हिम्मत का तो मेरे हज़ार कदम मदद के।'** रहम के सागर भगवान जानते हैं कि आत्मायें पाप कर्मों के बोझ से थक गई हैं तथा उनमें पुण्य कर्म करने की शक्ति बहुत कम रह गई है। इसलिए वे अपने साथ से, मदद से हिम्मत देते हैं और सिखाते हैं कि तुम रहमदिल बन अन्य आत्माओं की सेवा करो। शब्दों की आवाज़ से कर्मों की आवाज बलशाली होती है। अत: सदा यह धारणा रहे कि कोई करे या न करे मुझे रहम करना है। हम जितना परिवर्तन होंगे उतना दूसरों का मार्ग-दर्शन कर सकेंगे। फिर अन्य भी इसे करने लग जायेंगे और यह प्रक्रिया विश्वव्यापी हो जाएगी। फिर नई सृष्टि आने में देर नहीं लगेगी। इसके लिए अहम् को छोड़, रहमभाव का अर्थ समझना है जोकि निम्नलिखित कहानी में वर्णित है –

तीन दोस्त घूमने गये। उन्हें अगले दिन, रात के भोजन के समय तक लौट आना था परन्तु देर हो गई। वे भागते-भागते रेलवे स्टेशन पहुँचे, टिकट उनके हाथों में थे और वे आशा कर रहे थे कि गाड़ी शायद न छूटी हो। इस भाग-दौड़ में उनमें से एक उस मेज से टकरा गया जिस पर फूलों का टोकरा रखा था। फूल बिखर गए और खराब हो गए लेकिन उनके पास रुकने का समय नहीं था। वे दौड़ते रहे और गाड़ी के अंदर पहुँच कर, एक के अलावा सबने चैन की साँस ली। वह रहमदिल इंसान था। टोकरे वाली की मन:स्थिति ने उसकी भावनाओं को छुआ, उसने अपने साथियों को अलविदा कहा और लौट आया। उसने जो कुछ देखा उससे उसे अहसास हुआ कि उसने बाहर आकर ठीक ही किया है। मेज के पास एक दस साल की अंधी बच्ची बैठी थी जो रोजी-रोटी के लिए फूल बेचती थी। उसने कहा – "मुझे अहसास है कि हमने तुम्हारा बहुत नुकसान किया है और तुम्हारा आज का दिन भी खराब कर दिया है।" उसने 500 रुपये जेब से निकालकर उस लड़की को दिए और कहा – "इन 500 रुपयों से तुम्हारा नुकसान पूरा हो जाएगा।" फिर वह चला गया। लड़की यह सब कुछ देख तो न सकी, पर दूर जाते हुए कदमों की आवाज़ सुन पा रही थी। यह आवाज़ जैसे ही धीमी हुई, लड़की ने ज़ोर से आवाज़ लगाई – "क्या आप भगवान हैं?" उस व्यक्ति की गाड़ी तो छूट गयी थी लेकिन क्या वह विजेता था? बिल्कुल! **अगर जीत को सही नजरिए से देखा जाए तो बिना मैडल के भी कोई विजेता हो सकता है और मैडल जीत कर भी हारने वाला हो सकता है। एक ट्राफी जीतने से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण बात है एक अच्छा इंसान होना। कई बार जीत से ज़्यादा हार में विजय होती है। रहमदिल व्यक्ति अपने कदमों के निशान छोड़ जाता है। वह पीछे आने वालों का मार्ग-दर्शक स्वत: ही बन जाता है।**

1. आबू रोड (शान्तिवन)- ज्ञान-चर्चा के बाद राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के साथ समूह चित्र में आबू रोड के सभी समाचार पत्रों के संवाददाता । साथ में बैठे हैं ब्र.कु. भूपाल भाई, ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई तथा ब्र.कु. मनोरमा बहन । **2. बिलाड़ा (राज.)**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, क्षेत्र के अध्यक्ष भ्राता मदन सिंह राठौड़, पत्रकार भ्राता ओम पुरोहित, ब्र.कु. अरुणा बहन तथा अन्य । **3. आबू रोड**- शिव जयंती शोभायात्रा को हरी झण्डी देते हुए (बायें से) दादी रतन मोहिनी जी, ब्र.कु. भरत भाई, भाजपा के नगर अध्यक्ष भ्राता बाबू भाई पटेल, आबू-पिण्डवाडा विधायक भ्राता समाराम जी एवं नगर अध्यक्षा बहन संतोष राठौड़ । **4. ब्यावर**- सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री व राज्यसभा सदस्या बहन हेमामालिनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुईं ब्र.कु. विमला बहन । **5. दिल्ली (रोहिणी सेक्टर-16)**- शिव-उत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता जय भगवान अग्रवाल, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. सरला बहन एवं अन्य । **6. आबू रोड (शान्तिवन)**- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम में मंच संचालन करती हुईं ब्र.कु. मनोरमा बहन । साथ में हैं ब्र.कु. डॉ. सविता बहन, ब्रिगेडियर बहन ब्र.कु. डॉ. हंसा रावल, सिरोही ज़िला महिला काँग्रेस अध्यक्षा बहन रमा शर्मा, बहन सरोज राठौड़ तथा फिलिपिंस में महिला काँग्रेस की अध्यक्षा लूसी बहन । **7. मुरादाबाद**- आओ पालो प्रभु का प्यार – कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, मेयर बहन बीना अग्रवाल, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. भ्राता बृजमोहन तथा ब्र.कु. नीलू बहन । **8. बदायूँ**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ज़िला अधिकारी भ्राता पंधारी यादव, सी.एम.ओ. डॉ. भ्राता बंसल एवं ब्र.कु. सरोज बहन । साथ में हैं डॉ. प्रेम मंसद भाई एवं डॉ. सुभाष भाई ।

1. पीलीबंगा- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् शिव स्मृति में हैं – महामण्डलेश्वर 1008 आत्मानंद जी, नगरपालिका अध्यक्ष पृथ्वी भाई, ब्र.कु. रानी बहन, ब्र.कु. कृष्णलीला बहन तथा अन्य । **2. आगरा (म्यूजियम)-** तनाव मुक्ति कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं लॉयन्स क्लब की डायरेक्टर गर्वनर बहन शशि गुप्ता, डॉ. भ्राता राजेन्द्र गुप्ता, जेल अधीक्षक भ्राता एस.के. चौहान, चेम्बर ऑफ कॉमर्स के पूर्व अध्यक्ष भ्राता योगेश सिंहल, ब्र.कु. विमला बहन एवं ब्र.कु. पूनम बहन । **3. देहली (बुध विहार)-** शिव उत्सव का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सरला बहन, विधायक भ्राता कुलवन्त राणा, ब्र.कु. पुष्पा बहन एवं कोलोनाईजर भ्राता शम्भू शर्मा । **4. कमालगंज (उ.प्र.)-** करुणा एवं सहयोग की दृष्टि, रचेगी सुखमय सृष्टि विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. माधुरी बहन, ज़िला पंचायत अध्यक्ष भ्राता मुकेश राजपूत, बी.डी.ओ. भ्राता कामता प्रमाद पाल, प्रान्तीय अध्यक्ष वि.हि.प. भ्राता देवी सहाय पालीवाल, ब्लाक प्रमुख बहन पुष्पा रानी वर्मा एवं कवि डॉ. भ्राता रामआसरे दीक्षित निराला राही जी । **5. सहारनपुर-** पुलिस अधीक्षक भ्राता पुष्पक ज्योति को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दिव्य प्रभा बहन । साथ में हैं ब्र.कु. उर्मिला बहन । **6. गोरखपुर-** जेल अधीक्षक भ्राता वी.के. जैन कैदियों को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करते हुए । साथ में हैं लक्ष्मी बहन एवं ब्र.कु. पुष्पा बहन । **7. बाँदा-** खादी महोत्सव में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी हेतु ब्र.कु. गीता बहन को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए मुख्य विकास अधिकारी । साथ में हैं ब्र.कु. पुष्पा बहन एवं ब्र.कु. संगीता बहन । **8. चुरु-** ज़िला कारागार में ईश्वरीय संदेश देने के बाद जेल अधिकारियों के साथ ब्र.कु. सुमन बहन एवं ब्र.कु. रेखा बहन । **9. लखीमपुर-खीरी-** इंजीनियर भ्राता जगमोहन वर्मा को ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. सुनीता बहन । **10. देवरिया (उ.प्र.)-** शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. पुष्पा बहन । साथ में हैं व्यापार मण्डल के मुख्य अध्यक्ष ।

1. **दिल्ली (पीतमपुरा)**- शिवरात्रि कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं ब्र.कु. चक्रधारी बहन, ब्र.कु. सुधा बहन, ब्र.कु. रानी बहन तथा ब्र.कु. प्रभा बहन । 2. **उरई (उ.प्र.)**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए पुलिस अधीक्षक भ्राता अमिताभ यश । ब्र.कु. मीना बहन तथा अन्य भाई-बहनें भी साथ में हैं । 3. **फतेहपुर (अरबपुर)**- मानव कल्याण प्रतिष्ठान में महिलाओं को राजयोग प्रशिक्षण देती हुईं ब्र.कु. निरू बहन । 4. **मेड़ता सिटी**- श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान-महायज्ञ में ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. अनुराधा बहन। साथ में हैं श्री108 गुरु रामाशंकर दास जी महाराज । 5. **झिंझक**- महाशिवरात्रि कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए गीता बहन, प्रधानाचार्या बहन राधा, मुन्नी बहन, डॉ. भ्राता सुरेन्द्र तिवारी, प्रेम बहन एवं प्रीति बहन । 6. **मुरदला (आबू रोड)**- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. बापूलाल भाई, ब्र.कु. विमला बहन, नाना भाई तथा अन्य । 7. **लुनियापुरा (आबू रोड)**- शिव ध्वजारोहण के समय ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. उर्मिला बहन । ब्र.कु. पूनाराम भाई तथा अन्य भी साथ में हैं । 8. **भीमाना**- शिव जयंती कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. भगवान भाई, ब्र.कु. विमला बहन, ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. छगन भाई तथा अन्य गणमान्यजन ।

1. **डूँगरपुर**- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् शिव स्मृति में ज़िलाधीश भ्राता सुबीर कुमार, ब्र.कु. विजयालक्ष्मी बहन, ब्र.कु. पदमा बहन एवं अन्य । 2. **सुमेरपुर**- विकास अधिकारी भ्राता विजय कृष्ण श्रीवास्तव को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. विद्या बहन । 3. **मण्डार**- सरपंच भाई को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. शैल बहन एवं ब्र.कु. गीता बहन । 4. **फरुखनगर (ओ.आर.सी.)**- प्राचार्य भाई को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. प्रीति बहन । 5. **नानौता**- ज़िला पंचायत राज अधिकारी भ्राता के.एस. अवस्थी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सुरेश बहन । 6. **फर्रुखाबाद (नेहरु रोड)**- राष्ट्रीय एकता शिविर में कश्मीर से सम्मिलित हुए युवा को प्रमाण-पत्र प्रदान करती हुईं ब्र.कु. लता बहन । 7. **कायमगंज (अचरा)**- ब्लाक प्रमुख भ्राता अरविन्द गंगवार को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. मिथलेश बहन । 8. **बेवर (मैनपुरी)**- प्रवक्ता भ्राता श्रीकृष्ण यादव को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. रमा बहन । 9. **गुरुसहायगंज**- उत्तरप्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष भ्राता सलमान खुर्शीद को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. नीलम बहन । 10. **भादरा**- पुलिस निरीक्षक भ्राता ग्वाला जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. चन्द्रकाँता बहन । 11. **गाँधीनगर (आबू रोड)**- शिव ध्वजारोहण के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु. सुरेश भाई, ब्र.कु. प्रभा मिश्रा बहन, ब्र.कु. रत्ना बहन तथा अन्य । 12. **जाट समाज (आबू रोड)**- शिव ध्वजारोहण के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा ब्र.कु. नीता बहन ।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : bkatamad1@sancharnet.in (Ph. No. (02974)- 228125, 228124 shantivan@vsnl.com
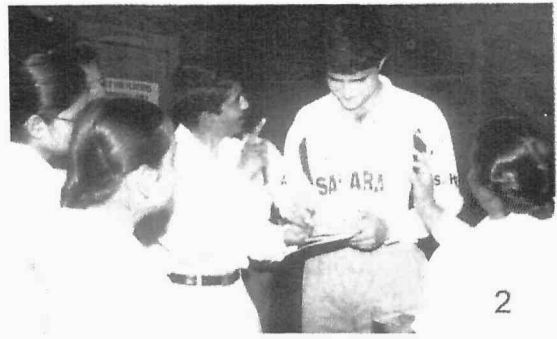
1. देहली (किंग्जवे कैम्प)- नवनिर्मित शान्ति भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. साधना बहन एवं ब्र.कु. अमित भाई । **2. गामदेवी (मुम्बई)**- भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान भ्राता सौरव गाँगुली को ईश्वरीय सौगात तथा ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. राजेश्वरी बहन, ब्र.कु. राजश्री बहन, ब्र.कु. सुप्रभा बहन तथा ब्र.कु. दीपक भाई । **3. फर्रुखाबाद (अढ़तियान)**- उत्तर प्रदेश के कृषि तथा धर्मार्थ विभाग मंत्री डॉ. भ्राता अशोक वाजपेयी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सरोज बहन तथा ब्र.कु. मंजू बहन । साथ में है उत्तरप्रदेश अल्पसंख्यक आयोग की सदस्या बहन नीलम रोमिला । **4. देहली (चाँदनी चौक)**- निगम पार्षद् भ्राता बृजमोहन शर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. विमला बहन । **5. बुटवल (नेपाल)**- ज्ञान-चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में हैं पुनरावेदन अदालत के मुख्य न्यायाधीश भ्राता राजेन्द्र प्रसाद कोइराला, ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. महेन्द्र, ब्र.कु. कृष्ण एवं अन्य । **6. देहली (पाण्डव भवन)**- पाकिस्तान क्रिकेट टीम के कप्तान इंजमाम-उल-हक को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. पुष्पा बहन । साथ में हैं ब्र.कु. ज्योति बहन तथा ब्र.कु. दीपक भाई। **7. भिलाई**- अंधकार से प्रकाश की ओर अभियान का शुभारंभ करते हुए भिलाई इस्पात संयंत्र के परियोजना अधिशासी निदेशक भ्राता आर.रामा राजू, उद्योगपति एवं समाजसेवक भ्राता बी.आर. जैन, भिलाई इस्पात संयंत्र के नगर सेवा महाप्रबंधक भ्राता के.के. सिंघल जी, ब्र.कु. उर्मिला बहन एवं ब्र.कु. आशा बहन । **8. चण्डीगढ़ (सेक्टर-33)**- शिव ध्वजारोहण के अवसर पर उपस्थित हैं विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि, ब्र.कु. अचल बहन तथा ब्र.कु. अमीरचन्द भाई ।

Regd.No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

1. आबू रोड (शान्तिवन)- म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता बाबूलाल गौर को अभिनन्दन-पत्र भेंट करती हुई राजयोगिनी दादी जानकी जी । साथ में हैं ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी । **2. आबू रोड (शान्तिवन)**- म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता बाबूलाल गौर को ईश्वरीय प्रसाद देती हुईं राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी । साथ में हैं ब्र.कु. महेन्द्र भाई । **3. देहली (यमुना पार)**- शिव जयंती शान्ति उत्सव के उद्घाटन मंच पर विराजमान हैं देहली की मुख्यमंत्री बहन शीला दीक्षित जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी एवं भ्राता चौधरी नसीब सिंह, क्षेत्रीय विधायक । **4. रायपुर**- महाशिवरात्रि महोत्सव तथा अंधकार से प्रकाश की ओर अभियान का शुभारंभ करते हुए छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री भ्राता बृजमोहन अग्रवाल, पुलिस महानिदेशक भ्राता ओमप्रकाश राठौर, ब्र.कु. कमला बहन तथा ब्र.कु. उर्मिला बहन । **5. कटक**- उड़ीसा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता आई.एम. कुदुशी तथा ब्र.कु. कमलेश बहन शिव ध्वज लहराते हुए ।